कीमत एक रुपया।

शमशाद-सौसन।

(नाटक।)

"दुर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय,
मुई खाल की सांस से सार भस्म होइ जाय।"

कबीर।

• اے زبردست زیر دست آزار •
• گرم تا کے بماند ایں بازار •

सादी।

पटना

हार-बन्धु छापाखाना, बांकीपुर।

१८८०।

अमआद-सौसन।

(नाटक।)

"दुर्बल की न सताइये जाकी मोटी हाय,
मुई खाल की सांस से सार भस्म होइ जाय।"

कबीर।

* اے زبر دست زیر دست آزار *
* گرم تا کے بماند ایں بازار *

सादी।

पटना।

बिहार-बन्धु छापाखाना, बांकीपुर।

१८८०।

भूमिका।

"सुरेन्द्र बिनोदिनी" के आशय पर यह किताब लिखी गई है। जहां तक बन पड़ा है वहां तक इस में उस के ऐबों को नहीं आने दिया है।

क० रा० प०

नाटक के आदमियों के नाम ।

मर्द ।

मौलवी हियातबख्श	... ...	बाढ़ के एक रईस।
ग़मशाद हुसैन	... ...	„
कैसर	...	हियात बख्श का नाती।
बख्शा	...	हियात बख्श का नौकर [लड़का।]
मिस्टर री	... ...	जीएन्ट मजिस्ट्रेट।

औरतें।

सौसन	...	हियात बख्श की पोती।
हमीदा	...	ग़मशाद की बहन।

कौन्स्टेब्ल, कैदी वगैरह ।

ग़मग़ाद-सौसन।

पहला अंक।

पहली झांकी।

बाढ़, मौल्वी हियातबख़्श का मकान।

सौसन गा रही है।

(गीत।)

रागणी झिंझौटी, ताल मध्यमान।

"तनज़्ज़ुल ने की है बुरी गत हमारी,
बहुत दूर पहुंची है नुब्बत हमारी।
गई गुज़री दुनिया से इज़्ज़त हमारी।
नहीं कुछ उभरने की सूरत हमारी।
पड़े हैं एक उम्मीद के हम सहारे।
तवक्के प' जन्नत की जीते हैं सारे।
हम हीं हैं वह नस्लें मुबारक यहां की,
कि बख़्शेंगे जो दीन की उस्तवारी?
करेंगे हम हीं क़ौम की ग़मगुसारी?
हमहीं पर उम्मीदें हैं मौक़ूफ़ सारी?
हम ही शमा इस्लाम रौशन करेंगे?
बड़ों का हमही नाम रौशन करेंगे?"—हाली

गीतख़तम होने के कुछ पेश्तर ही ग़मग़ाद का छुपे छुपे आना और सौसन के पीछे खड़े होना।]

सौसन । (गीत ख़तम होने के बाद) उन की यह गीत निहायत ही पसन्द है ।

शमशाद । (सामने आ कर प्यार की आवाज़ से) चूंकि मुझे यह गीत पसन्द है क्या इसी वास्ते गा रही थीं, सौसन?

सौ-। (उठके और शरमा कर) आओ, क्या तुम यहां बहुत देर से खड़े थे?

शम- । नहीं, तो अभी चला आता हूं ।

सौ-। (मुस्कुरा के) अच्छा "उनकी पसन्द है" इस जुम्ले से तुमने यह मानी क्यों कर निकाला कि मेरा "तुमसे" मत्लब था ?

शम-। वरन क्या किसी और से—

सौ-। (शर्मा कर) जाओ, जाओ, तुम्हें तो हर बातों में चुहल ही सूझती है ।

शम-। फ़िलहक़ीक़त, मैं तुरत ही जाऊंगा ।

सौ-। बस, आते देर नहीं कि "जाऊंगा, जऊंगा" करने लगे । जाओ, जाओ अभी जाओ । इस तरह आने के वास्ते बुलाया था किसने?

शम-। (हंस कर) ख़ैर तो लो मैं जाता हूं । (दो एक क़दम आगे बढ़ना ।)

सो-। (हाथ थांमकर) बैठो।

श-। नहीं, अब नहीं।

सो-। तुम्हें हमारे सरकी कसम,बैठो। (दोनों का बैठना)दादा जान से आज मुलाकात हुई थी ?

श-। हुई थी। उन्हें हमलोगों की शादी हो जानेकी बहुत जलदी है। कहते थे कि अब देर करना लाज़िम नहीं।

सो-। आज किधर जाने की तइयारी है ?

श-। जोएन्ट मजिस्ट्रेट री साहब के यहां।

सो-। किस लिये ?

श-। वह हमारे ६००० रुपयों के क़र्ज़दार हैं, उन्हीं रुपयों के लिये।

सो-। वह अंगरेज़ कैसा आदमी है ?

श-। सुबहानअल्लाह, बहुत ही लाइक़ शख्स है। इस तरह की हिन्दुस्तानियों की मुहब्बत, खुदा की क़सम, किसी अंगरेज़ में न देखी। माशाअल्लाह, री साहब हिन्दुस्तानी ज़बान क्या अच्छी बोलते हैं, मुझसे भी हिन्दुस्तानी ही में गुफ़्गू करते हैं। लफ़्ज़ों का तलफ़्फ़ुज़ भी बहुत सही करते हैं।

सो- । अच्छा काश आज न जाओ तो क्या हो ? देखो, मेरी बात सुनो, आज मत जाओ । न मालूम क्यों आज हमारे जोमें खटक रहा है, कि अगर तुम गये,तो तुम पर कोई आफ़त आयगी । मान जाओ, देखो मत जाओ ।

ग़- । सोसन, कुछ बात नहीं है । तुम मुझे प्यार करती हो, इसी लिये तुम्हें मेरी जुदाई पसन्द नहीं । वरन खुदा न खास्ते आफ़त भला कौन सी आ सकती है ?

सो- । यह क्या कहते हो, ग़मग़ाद ? क्या यह मुहब्बत आज ही शुरू हुई है, या जुदाई यह पहिले पहल है ?

ग़- । (हंस कर) ह ह ह । अलबत्ते बड़े बूढ़ों के मुंहसे यह अक्सर सुना जाता है कि जो बात होनेवाली होती है उस के आसार पहिले ही से मालूम हो जाते है । लेकिन सोसन, वह ज़माना गया । ईस्वी उन्नइसवीं सदी में इस तरह के ख़याल को दिलमें जगह कहां ?—ख़ैर तो मैं अब जाता हूं ।

सो- । (ग़मग़ाद का हाथ थांभके आंख में आंसू

भरकर) खुदया ! हमारे जोमें ऐसा क्यों खटक रहा है? इलाहो! इसे मैं तेरे सुपुर्द करती हूं। —देखो फिर आओगे न?

अ·। सोसन, भला यह कहने की क्या ज़रूरत थी? मैं कब कब नहीं आया हूं?

सो·। सो नहीं, पक्का वादा करो कि मैं आऊंगा।

अ-। हां, मैं आऊंगा,—अब जाऊं न?

सो-। (आंख बंदकरके) जा—ओ।

अ·। (जोमें) मुहब्बत भी खुदाने क्या ही चीज़ पैदा को है, —लेकिन सदा क्या इसी तरह निभेगी?

[गया।

(गाल पर हाथ धर कर सर नीचा किये सोसन का बैठना। और मौलवी हियातबख्श का प्रवेश।)

हिया·। सोसन तू क्या सोच रही है? तेरे लिये मैं एक किताब लाया हूं। इस का नाम "बामामनो-रंजन" है। इसके मानी यह हैं कि औरतों के दिलों को खुश करने वाली किताब। नागरी हर्फ़ तू पढ़——

(दोड़ता हुआ बख़शा का प्रवेश।)

बख़्शा। ए मियां! ए मियां! फिर ऊ बुडढ

आये हैं, जो उस रोज ढेर सा पुलाव ढकासिन था।

हिया-। ओ ठीक हाजी सुलतान बेग—लाहौलवलाकूवत, नामाकूल, अभी तक तूझे बोलने का शजर नहीं हुआ। भले आदमी को इसी तरह पर कहते हैं? हरामज़ादा! सूअरका पिल्ला!—जा, बुला ला।

(सोसन जाने लगी।)

सोसन, चली कहां, वह बेचारे तो एक बूढ़े से आदमी हैं।

(हाजी सुल्तानबेग को लेकर बख्शा का प्रवेश।)

हिया-। अस्सलाम अलैकुम।

हाजी-। वालेकुम सलाम।

हिया-। आइये, तशरीफ़ लाइये, बैठिये।

हाजी-। आप बैठें, मैं बैठता हूं। ज़ईफ़ी की वजह से हर हरकातमें तकलीफ़ें पहुंचती हैं। जनाब, इसी पेटको फ़िक्र के पीछे ज़माना तंग तंग है। इसी के लिये लोग मुल्क मुल्क भटकते फिरते हैं। अल्लाह! अल्लाह! तूही परवरदिगार है! तूही रज्ज़ाक़ है! सबकी रोज़ी तूही भेजता है!

बख्शा। (जीमें) बुढ़ोंकी बात चीत तो सुनो। घुमा फिरा के खाने की बात फिर लेग्राइस न? बबा कहे हैं कि "अल्लाह, अल्लाह, तू हो परवरदिगार है" अरे यह क्यों नहीं कहता कि "पुलाव, पुलाव, तू हो परवरदिगार है"।

हिया-। सोसन, हाजोजी को झुककर सलाम कर।

(सोसन का वैसही करना।)

हाजी। जीती रहो! उम्रदराज़ हो! बीबी फ़ातमा की सी निमाज़न होग्रो। (हियातबख़्श की तरफ़ मुतवज्जह होके) जनाब, लड़की तो बहुत ही नेक ख़स्लत देख पड़ती है। इसकी शादी कहां हुई है?

(सोसन का शरमा कर उठ जाना।)

हिया-। हज़्'त, बात तो ठैर गई है, लेकिन अभी तक निकाह नहीं हुआ है।

हाजी। एं, अभी तक निकाह नहीं हुआ है!

हिया। इसका बाप, खुदा उसे बहिश्त नसीब करे, शमशाद को बहुत चाहता था। मरते वक्त. मुझे क़सम देकर कह गया है कि "अब्बाजान,

मैं तो इस दुनिया से चला, लेकिन खुदा के लिये इतनी बात ज़रूर कीजियेगा, यानी सौसन का हाथ सिवा ग्रमग्राद के और कोई न पकड़े।" ग्रमग्राद न मालूम क्यों, अगरा रहा है, रोज़ आज कल आज कल करके टाल बटाल करता है। मुझे सिर्फ़ उसके मरने के वक़्त की बातों का लिहाज़ है। सैंकड़ों निसुबतें रोज़ आती हैं, मैं फेरे जाता हूं।

हाजी-। मियां ग्रमग्राद क्यों नाहक़ देर करते हैं? ज़िन्दगी का कुछ ठिकाना है? आप के सामने निकाह हो जावे तो क्या अच्छी बात हो।

हिया-। हज़रत, यह अंगरेज़ी का असर है। कहते हैं कि कमसीनी की शादी बुरी होती है। इतनी जलदी क्या है? लीजिये, बरस २२ २३ एक के तो आप हैं, और १३, १४ एक की लड़की है, उस पर भी अभी तक कमसिन हैं।

हाजी-। हुजुर न पूछिये, इन अंगरेज़ीदांओं ने तो मुल्क को खाये डाला। खुदा की मार! खुदा की मार! इनको धूम जैसी हमारी तरफ़ है, उसकी इधर एक पाई भी नहीं है। कहते हैं इतनी जलदी क्या है, वाह, मियां वाह जब हमल रह लेगा तब

निकाह होगा क्यों ? क्यों साहब, सुना है कि मियां शमशाद हवेली में आते जाते भी हैं ?

हिया-। हज़्रत, लड़कपन से दोनों साथ ही खेलते कूदते आये हैं, अब उनका आना जाना कैसे एक बार्गी बंद कर दें, लेकिन जनाब शमशाद लड़का बहुत नेक-खस्लत है।

हाजी-। शायद हों, लेकिन जनाब आलम-इ-शबाब में जवान लड़के और लड़कियों में वही रिश्ता है जो आतिश और रौग़न-इ-ज़र्द में है। दोनों को, बे निकाह पढ़वाये इस तरह पर मिलने जुलने देना हमारे ख़याल-इ-नाक़िस में फ़र्ज़ नहीं। यह काम ठीक वैसही है गोया किसी भूखे के सामने उमदे से उम्दा खाना पेश किया जावे।

हिया-। (मुस्कुरा कर) अरे—ए—ए (बख़्शा के कान में)—देख कुछ ज़ियादे लाना। समझा न ?

(बख़्शा का पुलाव कबाब वग़ैरह लाना और हाजी जी के सामने दस्तरख़ान बिछा कर खाना चुन देना।)

हिया-। हज़्रत, तब कुछ नोशजान फ़ुरमायें।

हा-। (तुरत उठकर) हा हा हा अल्लाह आप को उम्रदराज़ करे, जो हां हाज़िर हुआ। कुछ जनाब आप भी —

हिया-। हज़त तकल्लुफ़की ज़रूरत नहीं, आप बिस्मल्लाह कोजिये। मैं तो अभो खाना खाकर आता हूं।

हा-। बिहतर। (जीमें) अज़ीं चे बेहतर? खैरियत हुई कि इनकार किया, वरन इतने में क्या वह खाते और क्या मैं खाता। (ज़ाहिर।) ज़ईफ़ी ने बिल्कुल नाकारा बना दिया। अब न वह ताक़त है और न वह कूवत-इ-हाज़मा है।(बातेंचीतें करते करते कुछ देर के बाद सब खा जाना।)

हिया-। अबे किधर गया?

बखुशा। जो हुजूर!

(हियातबख्श का इशारा करना, बखुशा का फिर खाना लाना,और कुछ देर के बाद हाजोजी का वह भी साफ कर जाना।)

हिया-। अबे।

बखुशा। जो.का कहिये है: (जी में) इसका पेट क्या है कि तोमहल्ला गुदाम।

(फिर पुलाव का खाना।)

हिया-। (हाजी जी के दस्तरख़ान की तरफ़ देख के) अरे बख़्आ—आ—आ।

बख़्आ। बाप रे बाप, फिर?

हिया-। हरामज़ादा, नामाकूल इनका खाना तुझे क्यों आंख लगता है? हराम का पिल्ला, किसी भले आदमी को हमारे यहां आने देगा या नहीं?

बख़्। हमरा का लगी है मियां? लो हम और ले आवें हैं।

बख़्आ। (मौलवी हियातअख़्श से धीरे धीरे) मेरा हिसाव कर के महिना चुका दो मीयां। हम आप कने नोकरी नहीं करेंगी। चूल्हे में जाय ऐसी नोकरी।

हिया-। (तअज्जुब हो कर। क्यों क्यों?

बख़्आ। हजूर, हम अब नहीं रहेंगी। (रोता रोता) भला आज तो आप थें आपने खिलाया। पर अब तो हाजीजी को चाट लगी है जब न तब दौड़ दौड़ कर अइहें। और कहीं आप न रहे, और भूख से झूंझलाये हम ही को निगल बैठें तब? दुहाई मीयां की। मइया के हम ही एक बेटा हैं।

मइया हमरो बड़ी रोयेगी। — ले देखिये फिर सब ढकोस गया ने। बाप रे बाप ई पेट का है चांड़ है।

[दौड़ कर भागना।

हाजी-। (सर उठाके) हुजूर, वह लौंडा रोता रोता भागा क्यों ?

हिया-। कुछ नहीं, वह यों हो। थोड़ा सा और, अरे—ए—

हाजी-। जी, अब—अब ज़ियादा मत मंगवाइये। सेर आध एक और होने से अब काफ़ी।

हिया-। अरे हुसैनी — ई —ई— ।

(हुसैनी का खाना ले कर प्रवेश।)

हा-। (खाना खाने के बाद पानी पी कर पेट पर हाथ फेर के डिकार लेना) उ-उ-ऊ अलहम्द लिल्लाह। जनाब, अब अगर घंटे दो एक तक खाना न भो मिले तो हर्ज नहीं। उ-उ-ऊ बल्कि रात तक अब मैं बग़ैर कुछ खाये रहसकता हूं।

हिया-। अच्छा क़िबले फ़ुरमाइये तो कि के सेर यानि कितना पुलाव खाने से आप का पेट भरे, यानि आसूदगी हो ?

हा-। (आंख फैला कर) लाहौलवलाक़ूवत,

के सेर क्या पूछते हैं। कुछ शुमार हो तो बताऊं? बाक़ी पेट भर ो की बात न पूछिये। यह हराम-ज़ादा तो कभी भरता ही नहीं। यह लोगों का महज़ ख़ामख़याल है। पर एक बात है, यानी खाते खाते जब दोनों जबड़े दुखने लगते हैं, तब ही खाना छूटता है। तो ख़ैर बन्दा अब रुख़सत होता हूं।

[सलाम बन्दगी के बाद दोनों का जाना।

दूसरी झांकी।

बाढ़, —री साहब की कोठी।

(री साहब और दीननाथ का प्रवेश।)

री साहब। डीनो नाट, मैं उम्मोद करटा हूं कि टुमारे ज़िन्डगी गुज़रने का एहवाल टुमारे याडको राह से निकाल नहीं डिये गये हैं। विहार का डप्युटी मैजिस्ट्रेट टुम्हारे खून से अपना पियास बुझाने के लिये ख़ाहिशमन्ड हुआ टा। जांय मक-

टल टुमहारे लिये टइयार था। सिर्फ़ ग्रमारे नज़-र-इ-रहम से टुम नजाट पाया। ख़बरडार हो, कबी हम से नमकहरामी करेगा टो टुम ग्राप खटा खायगा। हामारा टुम कूछ नाई करने सकोगे। हामारा एक बाल भी बंका नेई होगा। हम मज़-हबो ग्रौर नफ़्स-कुश्र बोल के सारी डुनिया में मशूर है। ग्रौर ग्राबी चाहे टो टुमको डुनिया फ़ानो से रुकसट करे। यह भी टुमको पोग्रिडा नेई है क्यों?

दीननाथ। होजूर, हाम तो ग्राप का कैना हुग्रा गोलाम है, इग्र गोलाम पर इग्र कादर बेइतबार क्यों?

रो। मैं टूमको बेइटबार नेई समजटा हैं। टुम को बेइटबार समजटा टो इटना ऊंचा ग्रोहडा किस माफ़िक डेटा? टुमको सिरिफ़ होग्रियार करने मांगटा है।—वल, उस डोबिन का क्या हुग्रा?

दीन-। खोदावन्द, ग्रछूड़ी तो किग्री माफिक राजी होता नाई।

रो। यूयू गार्ड टुम को लाना होगा। सौडा

माफिक से राजी ना होवे टो जिस माफिक छिमन-लाल की जोरू को लाया टा, उस माफिक ले आओ। याड है?

टीन-। खोब याद है, खोदावन्द, आपका बात भला कौन नाई याद हैं?

रो। डेखो डीनोनाट, औरट को डेकने से अमारा जी उचल उटता है।

टीन-। खोदावन्दो, भगवानने एवरात को एआ ही बानाया।

(शमशाद का प्रवेश।)

रो। आहा आइये, इडर टशरीफ़ लाइये।

श-। हुजूर, हाज़िर हुआ। हुजूर का मिज़ाज शरीफ़?

रो। आप को डुआ से जोटा हूं।—डेकिये, मैंने कैसी अच्छी हिन्दुस्तानी सीखी है। गवर्न-मेन्टको चाईये कि मुजे कास ईनाम डे।

श-। हुजूरकी जैसी लियाक़त है, वैसी ही ज़बान है। आपकी तारीफ़ सारे शहर के मुंह से सुनी जाती है।

रो। आज आप किडर कडम रंजा फुरमाया ?

ग़-। वह— जो — रुपये — क़र्ज़ — लिये — गये थे, अगर सुबीता हो तो उन्हें —

रो। (जी में) डेट्स, डेट्स डेट्स नथींग बट डेट्स औन औल साइड्स*। (ज़ाहिर।) आप के पास मेरा डस्कत किया हुआ कोई डस्तावेज़ बो है ?

ग़-। हुजूर है।

रो। साट लेटे आया है।

ग़-। हुजूर, नहीं।

रो। अगर उस डस्तावेज़ को लिये हुए आज ग्रामकि वाड आप आवे टो बरो मिहरबानी हो।

ग़-। बहुत खूब, हुजूर। तो अब इस वक़्त बन्दा रुख़सत हो?

रो। औयेस, बन्डगी, बन्डगी।

[ग़मख़ाद गया।

रो। मैं बहरे कर्ज़ में डूब गया। मैं क्या करे, कुछ बी समज नई परटा।

[रो और दिननाथ गये।

* क़र्ज़, क़र्ज़, क़र्ज़, जिधर देखो उधर ही क़र्ज़।

तीसरी झांकी।

बाड़,— हियात बख्श का मकान।

कैसर टहल रहा है।

कै०। अः, बेशग़्ल कहां तक बैठा रहूं? कौन सा शग़ल निकालूं? क्या करूं? लड़कपन में तो इधर की उधर, उधर की इधर लगाया फिरता था, इससे लोग मुझे शैतान कहते थे, पर अब तो शैतान का भी चचा बन बैठा हूं।—मुझे इस क़दर खुशी किसी बात में नहीं मिलती, जितनी दो आदमियों के लड़ा देने में मिलती है। अलग बैठा बैठा कुंजी कूका करता हूं, और तमाशे देखता हूं।— अच्छा अबकी किसे किससे लड़ा दूं? (हंस-कर) हूं, मिले, मिले।—सुब्हानअल्लाह खूब शिकार हाथ लगा।—बड़ी मुहब्बत है।—अल्लाह रे, यह मु-हब्बत! जो इश्क़ किस्सों में पढ़ा करता था, वह तो हमारे घर ही पर मौजूद है। ऐसे आशिक़ माशूक़

को जानी दुश्मन न बना के छोड़ा तो हमारा नाम आजसे क़ैसर नहीं। कहां जाओगी कहां? तुम्हारे ऐन, ग़ैन, क़ाफ़ में ज़े हे रे न मिलाया तो मुझे आजसे कुत्ता ही कहके पुकारना। लेकिन फन्दा क्योंकर लगाऊं? (ग़ौर करना।) हां, हां, सूझी, खूब सूझी। अरे बख़शा—आ— आ।

(बख़शा का प्रवेश।)

बख़शा। का कहो हो, मियां।

क़ै०। ज़रा देख तो आ, मियां ग़मग़ाद मकान पर हैं?

बख़०। जाओ मियां हम नहीं जा हैं। तब से एक टोपी मांग रहे हैं सो देवे न करो हो। बार बार कामै फ़ुर्मावे को?

क़ै०। अच्छा, जा। अबकी ज़रूर दूंगा, जा जल्दी जा, मेरा भइया कैसा।

[बख़शा का जाना।

तीर तो लगाया है, लेकिन देखा चाहिये कहां जा लगता है?

(बख़शा का फिर प्रवेश।)

बख़०। (हंफता हुआ) हां, हां, घर—ही—

पर—तो है। अभी इधरे अइहैं।—लो, टोपिया दो न अब मियां। काम तो कर दिया।

के-। अबे सुन तो, मैंने जो उस दिन छिपकिली को मारा था, उसके लिये मुझे फांसी देना चाहिये या काला पानी भेजना चाहिये। नहीं रे, काला पानी ही—

बख-। टोपिया, दो न मियां, वाह वा।

के-। अच्छा सुन "बहार आई है, भर दे बादे गुल्गूं से पैमाना।" वग़ैरह।

बख-। (रोके) वाहवा, लो अब टाल बटाल करी हो। उं—उं—ऊं खुदा किसीं खाके अब—

के-। ख़ैर, तो अब सुन—"जो हम से तुम से क़रार था तुम्हें याद हो कि न याद हो।"—

बख-। (रोके) टोपिया दोगे कि नई? हो, हो, झूठ बोलो हो—

के-। अच्छा सुन—(बख़शा का पांव खींच के उसे गिरा देना, और बख़शा का रोना।)

[क़ैसर का जाना।

(शमशाद का प्रवेश।)

शम-। क्यों बखुआ, क्या हुआ क्या? रोता है क्यों? (हाथ पकड़ के उठाना।)

बखु-। (रोता हुआ) देखो न येही कैसर मियां कहिन कि देख तो आ कि "समसाद मियां मकान पर हैं कि नहीं?" हम कहा कि हमको एक टोपी दो तो जांय। सो खोदा किसूं खाके कहीन कि देंगे। अब मांगे लगे तब आंई बांई करे लगे, और गावे लगे। सो तो सो भला हम का किया था कि मेरा दुनो गोड़ खींच के पटकके भाग गये। ऐसी चोट लगी है कि हम का कहें।

श-। (जेबसे एक रुपया निकाल कर) ले, मैं तुझे यह रुपया देता हूं, टोपी मोल लेकर पहनना। तेरी मा अच्छी हुई?

बखु-। अब तनिक अच्छो है। पर अभी तक नताकतो बड़ो है, अभी कमावे कहां आवे है?

श-। देख, दो आनेकी तो टोपी मोल लेना, बाकी चौदह आने पैसे बुढ़िया के हवाले कर देना। खबरदार, मेरा नाम मत बताना।

बखु-। आपका नाम नहीं बतलावेंगे तो कहेगी

कि चोरी करके लाइस है। मारेगी तब कह देंगे कि मिहमान दिहिन हैं।

[भाग जाना

श-। अबे मिहमान कैसे?—लौंडा बड़ा शरीर है।

कैसर का फिर प्रवेश।

कै-। क्यों, मियां शमशाद, नानाजान तुम पर आज इतने ख़फ़ा क्यों हैं?

श-। मुझपर ख़फ़ा! वल्लाह आलम, मुझे कुछ नहीं मालूम। क्यों भई, तुम्हें मालूम है?

कै-। वल्लाह, तुम्हें कुछ भी नहीं मालूम है? अल्लाह, इस क़दर ख़फ़गी, और तुम्हें उसका हाल कुछ नहीं मालूम!

श-। (घबराके) वाक़ई, मुझे कुछ नहीं मालूम है। भई, क्या बात है? तुम्हें मालूम है? तुमने किस तरह मालूम किया?

कै-। हाजीजी, न मालूम कहां से, सौसनकी निस्बत ले आये थे।

श-। ऐं, निस्बत! क्या क्या? अच्छा तब?

कै-। तब क्या? हाजीजी की सब बातें सुन कर

नानाने जवाब दिया कि "मुझे यह निस्बत दिल ओ जान से पसन्द है। ग्रमग्राद की कहां तक खुशामद करूं? अब सिर्फ़ सोसनकी राय लिया चाहिये। अगर उसकी भी राय हो गई तो बात पक्की हो समझ लीजिये।"

ग्र-। अजी, यह क्या कहते हो? खैर, फिर हुआ क्या?

कै-। फिर होगा क्या? मुझे नानाने तब सोसन की राय पूछ आने को कहा।

ग्र-। सोसनने क्या कहा?

कै-। सोसन तो तुम्हारी ही तरफ़ है।

ग्र- (जोमें) वही तो। (ज़ाहिर।) उसने आखिर कहा क्या?

कै। औरतों के दिलकी बात क्या जल्दी खुलती है? जब इस तरह का सवाल करो तब एक तरह का जवाब मिलता है। जब मैंने भी इधर उधर फ़िक़रे दे दे के खूब पूछमात किया, तब बोली भला यह कैसे हो सकता है? दादाजान ने उन्हें, यानी तुमको, इतने दिनों से ज़बान दे रक्खी है, अब अगर एका एक इस

तरह बात बदल जायगी, तो उनका जी क्या कहेगा ?

श-। (जोशमें) यह बात बिलकुल झूठी मालूम पड़ती है। भला अपनी बात अपने मुंहसे कैसे कहेगी ? एक तो औरत, दूसरे ख़ास कर सोसन बड़ी शरमाऊ है। (ज़ाहिर ।) सिर्फ़ इतना ही, और कुछ नहीं बोली ?

के-। फिर ज़रा ठहरके बोली कि "दादाजान तीन महीने और भी इन्तज़ार देखें. इतने में अगर उन्होंने शादी कर ली तो ख़ैर नहीं तो फिर जहां जी चाहे शादी कर दें।"

श-। (गुस्सेसे) केसर, तुम तो उसके भाई हो, तुमसे वह इतना क्यों कर बोली ?

के-। मुझे क्या उसके जुमले याद हैं ?—मतलब यही था।

श-। (गुस्सेसे) मैं तुम्हारी बातों का एक हर्फ़ भी इतमाद नहीं करता। सोसन ने हरगिज़ ऐसा नहीं कहा होगा ? सोसनके दिलको मैं ख़ूब जानता हूं।

के-। शमशाद, लोग सच कहते हैं कि अब

ज़माना नेकी का नहीं है।" यह तेरह सदी है, नेकी के एवज़ बदी है।" तुमने पूछा इस लिये मैंने कहा, वरन मुझे क्या ग़रज़ पड़ी थी? — आख़िर उसने बेजाय क्या कहा?

श०। कहते हो कि "बेजाय क्या कहा"? मैं गोया उस के रहम का मौक़ूफ़ हूं? अगर उसने शादी की तो ख़ैर, नहीं तो मैं रंज हूंगा। सिर्फ़ हमारे खुश करने के लिये वह शादी करती हैं? तीन महीनों के अन्दर अगर मैंने शादी कर ली तो कर लो, नहीं तो वह दूसरे से शादी कर लेंगी। कहते हो कि बेजाय नहीं है।

क़०। अगर मैं जानता होता कि तुम ख़फ़ा हो जाओगे तो क़सम खुदा की मैं हरगिज़ नहीं कहता।

श०। लाहौलविलाक़ूवत, तुम पर भला मैं क्या ख़फ़ा हूंगा? अजी, तुम पर मैं ख़फ़ा नहीं होता बलकि तुम्हारे झूठ बोलने पर मुझे नफ़रत आती है।

क़०। (धीमी आवाज़ से) शमशाद, तुम्हें मैं क्या कहूं, अगर और कोई मुझे इस तरह मुंह

पर झूठा कहता तो नतीजा भी उसी वक़्त हाथो हाथ पा लेता। (ठंठी सांस लेकर) आज तक किसीने मुझे झूठा नहीं कहा था। ख़ुदा के फ़ज़्ल से आज तुमने वह भी कह सुनाया। आज झूठा कहे हो, कल चोर, परसों डांकू भी कह लेना।

"झिड़की तो मुद्दतों से मसावात हो गई,
गाली कभी न दी थी, सो अब बात हो गई।
बाक़ी रहा है मार खाना, वह भी है आज कल,
सुन लोगे एक दिन कि यह औक़ात हो गई।"

(आह भरके) लेकिन याद रहे, इसका फल भी जल्दी ही मिलेगा। (मूछों पर ताव देना

ग़- । (कुछ ग़ौर करने के बाद जी में) अभी इससे अपनी ग़रज़ निकालनी है, बिलफ़ेल इसे घट-खाना मस्लहत नहीं। (ज़ाहिर।)ऐ है, अजी, मैं तो दिल्लगी करता था। तुम तो फ़िलहक़ीक़त ख़फ़ा हो गये।— लेकिन एक बात है, यानि ख़ाह तुम्हारे सुनने में या समझने में ग़लती ज़रूर हुई है। देखो,सौसन ने ऐसा हरगिज़ नहीं कहा होगा।

के। हां, अलबत्ते यह बात इन्सानियत की है।

ग़लती मुझ से क्या, बलकि तुम भी, बी०ए० पास किये हो तो क्या, ग़लती कर सकते हो। "अल-इन्सान मुरक्कबुलख़ता ओ निसियान।" ख़ैर तुम भी तो आख़िर अक़्लमन्द हो, एक काम क्यों नहीं करते? सौसन के काम-काज और बात-चीत से उसका इम्तिहान ले लो। जो हक़ीक़त होगी, ख़ुद बख़ुद खुल जायगी।

ग़-। हमारी सौसन नेकी की पुतली है। उसकी मुहब्बत में मुझे तिल भर भी शक नहीं। मैं इम्तिहान क्यों लेने लगा। मुझे ओथेलो मत समझना। आयेगो की तरह तुम हमारी ख़ालिस मुहब्बत में शक नहीं डाल सकते।

[जाना।

के-। (मुस्कुराता हुआ) हज़रत, कहते हो शक नहीं दिला सकते। अजी, शक तो मैं तुम्हारे बुजुर्गों को दिलवा दूं, तुम्हारी क्या हक़ीक़त है। जड़ ही में तो आग लगा दी है। पनाह कहां? पर आग को सुलगाते रहना चाहिये। शायद बुझ जाय। भ'ई हमारे, ज़ियादती किसी बातकी अच्छी नहीं। जहां मुहब्बत की ज़ियादती है,

वहां लड़ाई भी वैसी ही रक्खी हुई है। अब उधर देखें। हि हि हि, डा डोरि डा डिर डा डारा।

[जाता।

चौथी झांकी।

री साहब के मकान से कुछ दूर, बीच में खंडहर
और टूटा सा मकान और चारों
तरफ़ आम वग़ैरहके दरख़्त।

घोड़े पर सवार री साहब और पीछे पीछे दीननाथ का प्रवेश।

री। (घोड़े पर से उतरकर) वल, टुम गोड़े को ले जाओ। डेको अमआड आवे टो उस को यहां बेज डो।

दीन-। (बड़ी धीमी आवाज़ से और डरसे कांपता हुआ) खोदावंद, हियां भूत जत थाकता है,

ग्रांझ का बेला आप यहां एकला थाकेगा ? चोर चूहाड़का भी बड़ा डर है। हीयां, होजूर——

रो। वल नौन्सन्स, टुम अपने घरके में टेल डो।— जो बोला सो करो, सूअर।

दीन- (मुलायमियत से) जो होकोम खोदा-बन्द। किन्तु ग्रहीब को बला लावे, होजूर। घोंड़ा ठो हाम को काट लेगा, खोदाबन्दो।

(रो साहब का डांटना, और दीननाथ का डरना, और उज्र करना, आखिरश रोसाहब के मारने की मुस्तइदी देख के घोड़े को लेजाना।)

रो। (ग़ौर करता हुआ) आई ऐम इम-र्सड इन डेट्स टू माई लिप्स, ऐन्ड मस्ट एन्ड दिस मैटर ऐट लीस्ट सम हाउ और अदर टूडे। (टहलना।)

ग्रमग्राद का प्रवेश।

ग्र-। आदाब अर्ज़ है।

रो। बन्दगो।

ग्र-। हुजूर, आज यहां कहां ?—हुजूर का दस्तखत किया हुआ दस्तावेज़ बन्दा लाया है।

रो। डेखे।

ग्र-। जो यही तो है। (रो के हाथ में देना।)

रो। (उस दस्तावेज़ को हाथ में लेकर पहिले अपने दस्तखतको देखके, पीछे उसे फाड़के फेंक देना।) क्यों जनाब, आपका डस्तावेज़ कहां है? मैंने आपसे कब रुपया कर्ज़ लिया?

अ-। (खफ़ा सा होके) यह आपने क्या किया? इसे फाड़के फेंक क्यों दिया?

रो। वल, चला जाओ। जाओ, अमारा वक्त बेग्रकीमट है।

अ-। हुजूर आपके बड़े ओसरमें मैं काम आया था। उसका यह आपने इनआम दिया? मैं आपको अंगरेज़ोंमें लाइक़ समझता था, उसका यह आपने सुबूत दिया? या हमारे सबूका आप इम्तिहान लेते हैं?

रो। वल, टुमारी बड़ी खुशनसोबी है, कि मैंने टुमारे रुपया को छूआ। उन रुपयों को फिरा मांगटा है?

अ-। (गुस्सा हो कर) मुझे आपने बिल्कुल बच्चा ही समझ लिया? यह क्या आप लड़का फुसलाते हैं? आपने क्या समझ रक्खा है, मैं आपसे रुपया न ले सकूंगा?

रो। किस माफिक लेगा?

अ-। आखिर गवाह तो हैं।

रो। (हंसकर) अरे बेकूफ, जिस डम हम बाइब्ल चूम कर जो कुछ इज़हार करेगा, उसके बरखिलाफ़ सैंकरो मुसल्मान कुरान छू छू कर कसम कावे टो कुछ नेई होगा। इटना डिन से अंगरेज़ के राज में रहटा है, टूजे इटनी अकल न आई? डेख, टेरी नाडानी देखके हमारे जीमें बरा अफ़सोस होटा है।

अ-। अब भी अर्ज़ करता हूं, बग़ैर नालिश के रुपये दे दिजिये, मैं कुछ छोड़ दूंगा।

रो। टुमको एक छोटी सी नाज़िनी बहन है? उसको एक डिन अमारा बिस्तरा पर बेज डो। डेको, अम टुमको थोड़ा रुपया डे डेगा।

अ-। (गुस्से से अंधा हो के) क्या, मुझे भडुआ मुक़र्रर कर लिया? अल्लाह! अल्लाह! अहल-इ-इस लाम का जोश कहां गया! (रो साहब के सीने में ज़ोर से एक लात मारना, और रो साहब का गिरना।)

रो। (तुरत उठ के जेबसे भरा हुआ तमंचा निकाल अमआद पर गोली चलाके) डोज़क

का कुट्टा, अपने अल्लाह को याड कर। (अम-आद का गिरना।)

[जाना।

दूसरा अंक।

पहिली झांकी।

बाड़—अमशाद्का मकान।

हमीदा। भइया जो तीन बजेसे बाहर निकले हैं, सो अभी तक नहीं आये?—किसी दोस्तके मकान पर बैठे होंगे।—इतनी देर तो कभी भी नहीं होती थी। आज क्या है?—हमारे भाई सा भाई खुदा ने किसी को न दिया होगा? कितना दिक करती हूं, कैसी कैसी फ़र्माइशें करती हूं, पर अभी तक उन्होंने मुझे एक आधी बात तक न कही। (आंख में आंसू भरकर) लड़कपन से बाप मा खो बैठी हूं, पर आज तक मुझे यह नहीं मालूम हुआ, कि क्या मैं बे बाप मा की हूं या नहीं? हमारे लिये बाप कहो तो और मा कहो

तो जो कुछ है सो भइया है। हमारे पढ़ाने लिखाने का भी उन्हें कितना ख़याल है?—ख़ैर, जब तक कुछ पढ़ूं। (किताब पढ़ना।)

पीछे से सौसन का छिपे छिपे आना, और हमीदा की आंखें बन्द करना।

सौसन। अच्छी, बूझो तो कौन है?

हमीदा। (हंसकर) अरे और कौन होगा? हमारी भाभी होंगी।

सौ-। (ग्रमीके हाथ खींच के) अल्लाह, मुंह तो देखो?

हमी-। (हंसकर) सो क्या हुआ, अरे आज नहीं हो तो कल तो होगी। (सौसनको बग़लमें बिठला कर) बुआ, सचमुच तुम्हारी सी ख़ूबसूरत औरत दुनिया जहान में कोई न होगी। भइया क्या भला यों ही तुम्हें चाहते हैं?

सौ-। जाओ, जाओ, तुम्हारे बनानेके लिये क्या मैं ही एक मिली हूं? बीबी, अपने बदनकी तरफ़ देख कर मुझे ख़ूबसूरत कहती हो क्यों?

हमी-। अच्छी बुआ, भइया से पूछियो तो कि ज़ियादे ख़ूबसूरत कौन है, तुम कि मैं?

सो-। भइया तुम्हारे, भला पूछनेवाली मैं कौन ?

हमो-। अल्लाह रे, कहती हैं "मैं कौन" ?

सो-। वाह, तुम्हें ग़रज़ है, तुम पूछना। — ख़ैर वह कौन किताब है, बीबी ?

हमी-। "मिरातुलउरूस।"

सो-। (उस किताब को हाथमें लेके) किस जगह पढ़ रही थी, बुआ ?

हमी-। उस हजिनका बयान पढ़ रही थी, जिसने अकबरी ख़ानमको ठगा था।

सो-। अक्बरी ख़ानम को हजिन का ठगना !

हमी-। (हंसके) अक्बरी ख़ानम इसी लाइक़ की थीं ! ——बुआ, वाक़ई, बुरी औरतों से खुदा बचाये ! जो औरत तुम या असग़री की सी नेक ख़स्लत और शाइस्ते न हो, खुदा न करे कि कोई मर्द उसके फन्दे में पड़े। ऐसी बीबियां भर ज़िन्दगी मियां को आठ आठ आंसू रुलाती हैं।

सो-। (दाहिने हाथ से हमीदा को अपने बदन में लपटाके) तुम मुझे चाहती हो, इसी से तुम मुझ में सब वस्फ़ ही वस्फ़ पाती हो, वरन सच पूछो

तो मैं किस लाइक़ की हूं, बीबी ?—ख़ैर तुम ने "सज्जाद-सुम्बुल" पढ़ा है ?

हमी-। कौन "सज्जाद-सुम्बुल" बुआ ?—ओः, "सज्जाद-सुम्बुल"—नाटक ? पढ़ा तो नहीं है, मगर क़िस्सा सुन लिया है।—अच्छी बुआ, यह किताब इतनी मशहूर क्यों नहीं है ?

सौ-। ऐ लो इसकी वजह तुम्हें नहीं मालूम है ? वह नागरी हर्फ़ में छपी है न ? और हमारे मुसल्मान भाइयों को इस हर्फ़ के बरख़िलाफ़ कितना तअस्सुब है, क्या नहीं जानती हो ?

हमी-। हां बुआ, नागरी हर्फ़ क्या वाक़ई फ़ार्सी से ज़ियादे सही और पूरा है ? भइया भी अक्सर कहा करते हैं कि हिन्दुस्तानी ज़बान लिखने के लिये फ़ार्सी से नागरी हर्फ़ ज़ियादे मुवाफ़िक़ है।

सौ-। इसमें भी कुछ शक है ?— ख़ैर, अच्छी याद आई। तुम्हारे भइया आज हैं कहां ?

हमी-। (हंसके) वल्लाह, सच कहना बुआ, यह बात गोया तुम्हें अभी याद आई है। यह बात गोया ऐसी ज़रूरी न थी, और सच तो यह है कि इसी बात के पूछने के वास्ते तुम्हारा जो छट-

पटा रहा था! "हजिन" "सज्जाद" "सुम्बुल" "नागरी" "सागरी" झट पट क्यों इतना बका रही थी। जोकी बात पहले ही पूछ लो होती। मैं तो पहले ही समझ गई थी, सिर्फ़ देख रही थी कि देखिये उस बात को कब पूछती हैं। (सोसन के गाल को दाब के) बुआ, ये चालाकियां तुम्हें किसने सिखलाईं ?

सो-। अः बताओ भी सही, जानती तो हूं कि तुम्हें खूब बोलने आता है।

हमी-। वल्लाह, मैं भी तुमसे यही पूछने को थी। उन्हो की इन्तज़ार खोंच रही थी, कि तुम आ गईं। ख़ैर भइया नहीं तो, भाभी ही सही। अल्लाह मुंह देखो कैसा हो गया। अच्छा, देखो अब आंसू गिरा।

सो-। हां, आंसू गिरेगा न तो क्या ?——ला-होलवलाकूअत, मैं भूल ही गई थी, क़ैसर भइया दरवाज़े पर खड़े हैं, अन्दर बुला लूं ?

हमी-। अन्दर बुलाओगी ? (धीमी आवाज़ से) अ——च्छा——बुला——लो।

सो-। क्या तुम उनके सामने नहीं होती हो ?

अल्लाह, यह नाज़ कबसे शुरू हुआ है ? जाती हूं, बुला लाती हूं ।

गई, और कैसर को लेकर आई।

सो-। वाह यह क्या, दोनों ने अपना अपना सर नीचा क्यों कर लिया ?

हमी-। (जी में) सोसन दीवानी हो गई है क्या ?

कै-। सोसन, मैं दरवाज़े पर छड़ी भूल आया हूं, उसे ले आऊं ? शायद कोई उठाके ले जावे।

सो-। उठाके कौन ले जावेगा ?

कै-। (जीमें) अः इससे पिंड छुड़ाना मुशकिल हो गया। खुदा की मार ! मुझसे सब कुछ हो सकता है, लेकिन हमीदा की तिर्छी चितवन की चोट नहीं सही जाती। (ज़ाहिर।) बाहर का ठिकाना क्या, शायद कोई उठा ले जावे, मैं ले आउं ।

सो-। भइया, मैं समझ गई, अच्छा जाओ।

कै-। (जीमें) समझ क्या गई, अपना सर ? ओः खुदा की पनाह ! खुदा की पनाह ! बड़ी खैरियत हुई।

गया

सो-। कैसर भइया भी एक अजब तरह के आदमी हैं। दिलके साफ़ हैं, लेकिन है क्या, कि अभी

तक लड़कपन की शरारत नहीं गई है।——अच्छी बीवी, उनको देख कर तुम इतना शरमाती हो क्यों? —बीवी, अब छिपाना लाहासिल है, मैं तो समझ गई।

हमी-। खैर, चलो कोठे पर चलें, ऐलबरट नाम एक नये क़िस्म का गुलाब भइयाने मंगवाया है चलो देखें, इस वक़्त खिला होगा।

सौ-। बुआ बात इस तरह उड़ा दोगी? अच्छा चलो।

[दोनों गईं।

दूसरी झांकी।

बाढ़—मौलवी हियातबख़्श के मकान के पास की गली।

शमशाद का प्रवेश।

शम-। नमकहराम, दग़ाबाज़, कमीना! बांयें बाजू के गोश्त में लग कर गोली निकल गई,

इसी से बच गया। वरन तू तो हमारी जान लेही चुका था। सिर्फ़ ख़ुदा की मिहरबानी से मैं बच गया। अरे गुनहगार दोज़खी तू किस तरह ख़ुदा के यहां मुंह दिखलायेगा ? (दो ज़ानू हो कर, और आस्मान की तरफ़ हाथ उठा कर) या अल्लाह ताला, गवाह रह, अगर मैं ज़िन्दा रहा, और वह भी ज़िन्दा रहा तो एक दिन न एक दिन मैं इसका पूरा बदला लूंगा पै लूंगा। (उठ कर फिरना।) —सौसन और हमीदा हमारे लिये कितनी मुतफ़िक्किर होंगी। मैं सौसन की बात पर हसता था, आख़िर वही बात पेश आई न ?

केसर का प्रवेश।

कहो केसर, सब ख़ैरियत है न ?

के॰। (तअज्जुब हो कर) ऐं, तुम्हारे कपड़ों में ख़ूनका दाग़ कैसा ? तुम्हारी पीठ में मिट्टी कैसे लगी ? कहीं गिर उर गये थे क्या ?

अ॰। (मुस्कुरा कर) हां और क्या, गिरना ही कहना चाहिये। ख़ैर, सौसन कैसी है ? हमारे बारे में कुछ पूछती थी ?

के॰। (जोमें) यह अच्छा मौक़ा हाथ लगा

है, इस वक्त जिधर चाहूं इस की राय फेर दे सकता हूं। (ज़ाहिर।) हां सब खेरियत है। सौसन ने परसों एक बार तुम्हारी बात पूछी थी।— तुम इधर दो एक रोज़ थे कहां?

अ-। (जोमें) ऐं सिर्फ़ परसों ही एक बार? फिर नहीं? (ज़ाहिर।) यहीं था।

कै-। चलो न ऊपर, सौसन से मुलाक़ात कर लो।

अ-। नहीं अभी तो मैं मकान जाता हूं, कल सुभी आऊंगा।

कै-। मैं तुम्हारे आने की खबर सौसन को सुना आऊं। (जीमें) देखता हूं खुदा हमारे काम-याब होने के सामान बांधे जाता है। (ज़ाहिर।) तुम्हारी तबिअत कुछ मांदी है क्या?

अ-। हां कुछ है। खैर जहां जाते थे वहां जाओ।

[कैसर गया।

अ-। वाह हमारी तबिअत ऐसी क्यों हो रही है?——फ़िलहक़ीक़त औरतों की मुहब्बत का कुछ भी इतमाद नहीं।——हा, हमारी पैदाइश क्या

इसी ग़म से जलने के लिये हुई थी ?——नहीं, ऐसा क्या होगा ? क़ैसर झूठा है। सोसन की पाक और ख़ालिस मुहब्बत में अगर शक करूंगा, तो ज़रूर उसकी दरगाह में गुनहगार ठहराया जाऊंगा। बेशक सोसन वही है, और हमारी ही है। ज़रूर ज़रूर हमारी है। वह और किसीकी नहीं। न मैं किसीकी होने दूंगा।

[जाना।

सोसन को ले कर क़ैसर का फिर प्रवेश।

क़ै-। (जीमें) इसको किस तरह समझायें ? इसको कोई और ही पट्टी दें। (ज़ाहिर।) देख सोसन, मियां शमशाद की तबिअत आज बहुत ख़राब है। उन्हें बहुत बकाना मत।

सो-। (सर नीचा करके, धीमी आवाज़ से) कौन सी बीमारी है, तुमको मालूम है भइया ?

क़ै-। मुझे अच्छी तरह नहीं मालूम। पर देख, ख़बरदार, अगर ज़ियादा बकाविगी, तो बीमारी बढ़ जावेगी। जा करके दो ही एक बात करना, और तुरत चली आना।

सो-। मैं हमीदा के पास चुपचाप बैठी रहूंगी।

के-। नः, न। ऐसा हरगिज़ न करना। भला तू वहां बैठी रहेगी, और उनसे बे बोले रहा जायगा। अगर उनकी खैरख़ाह है तो मेरी बात सुन। खड़ी खड़ी हाल पूछ के चली आ। बैठने भी कहें, तो कुछ बहाना कर देना।

सो-। भइया, उन को बुरा लगी तब ?

के-। अरे बेवकूफ़ हुई है क्या ? बुरा लगने पर क्या खयाल करती है ? बीमारी बढ़ जायगी तो अच्छा होगा ?

[दोनों गये।

तीसरी झांकी।

रो साहबका मकान।

कई एक कैदी पुराने मकान को मरम्मत कर रहे हैं।

१ला क़ैदी। अरे ई घरवा को कबहीं उठतई

हो? की जने की सरवा मन में गजर करे हई रोजि ढहवे हई अजर रोजि उठवे हई। हमनी के सरवा मरग कैलक है। अप्पन टेंका के खरच होवई.तब न जान पड़ई। मुफुत के काम बइठल बइठल एक अकगो फुर्माइस छांटते रह हई। से तो से भला ई रोज रोज के मार सहल जइतई?

२रा के-। अरे दुर मर्दे, रसे रसे बोल। कहूं सुन पइतऊ, तो पिठिया के खाले उदार लेतऊ।

१ला के-। अरे सुन्तऊ कि महराज, केऊ दोसर तेसर हियां बइठल हई। सब के तो एके दसा हई।

३रा के-। अरे पेट भर के खिलवई तब भी जनिअई कि भला कमवां ले हई मारे हई पीटे हई, तो भला भर पेट खाय के तो दे हई। तब से ऊ तो न कर हई, महराज। भला पाव भर सतुआ में ई पहाड़ अइसन दिन रात कइसे कटई? सरकार बहादुर के जो हुकुम हई सेउ तो न दे हई। (आंख में आंसू भर कर) हाय! भला हमनो कि घोड़वो बैलवो से बत्तर भेलूं?

४था के-। तोहनी तो भला इतनीए पर रोवे ह, माय बेटी के इज्जत के बचावे हई?

१ला के-। राम जी बचत्यिन ग्राऊर के ?

४था के-। ग्ररे करतई कि महाराज, सभे गोटा हिम्मत करे न, ग्रभी तो एक मजा दिखा दीग्रइ।

(एक कोन्स्टेबल का प्रवेश।)

कोन्स्टेबल-। चलते जाग्रो, चलते जाग्रो, सब कोई उधर चलो।

[सब कैदियों को ले कर गया।

[रो साहब और दीननाथ का प्रवेश।

रो। क्या क्या, सच हो ?

दीन। खोदाबन्द, हाम क्या ग्रार झूठ बोलता है ? कान्हाई गोवाला बोलता है कि वह ग्राप को ग्रापना ग्रांख से गूली कोरते देखा है। ग्रौर जब ग्राप चोला गोया तोबे ग्रोई ग्राला ग्रामग्राद का मूंह हाथ पर पानी छोड़के के ग्रोश को होश में लाया।

रो। ऐसा ?——पर उसको हमने गोली कबी नेई मारा। बूझा ?

दीन-। नाई खोदाबन्द, हाम क्या ईतना नाई समझने पारता है ? ग्राप का बदन ही दया का बाना हुग्रा है। ग्राप मालिक हाय। भला

इग्र तारह कोरेगा? कभी नाई।——मगर खोदावन्दी ग्राला कानाई गीवाला का मुंह कोई रकम ग्रे बन्दी कोरा उचित होच्छे। ऊ तो ग्राल्लार बैटा ग्राला ग्रर्बची श्रीग्र बात को बोकता फिरता है।

रो। वल, टुम ठोक बोला। (सोच कर) टुम को कूछ परवा नेई। हम बना लेगा। बगवान करे श्रंगरेज़ का राज यहां हमीग्रा बना रहे। श्रोर हम साब लोग नफ़रत करने लाइक़ नेटिव को सडा अपना गुलाम समजे।——डेको एक बाट बहुट अच्छा सूजा।

दीन-। हां खोदावन्दो, ग्रार क्या? अब तो इंगरेज़ छाड़ा श्रोर कौन ग्राला का इतना मगदूर है कि हीयां का राज करे। देग्री लोग ग्रदा श्राप लोगों का गोलामी कोरेगा।——आच्छा खोदा-वन्दी ऊ बात ठो कौन ग्रूभा है?

रो। सोफ़्‌न् साहब का नया आईन हम-लोग के लिये बरा फ़ाइडेमन्ड हुआ। जो करना मांगे सो करने सकटा। हो — हो — हो — टुम उस गीवाला के नाम से टुम को ठगा है बोल के

नालिश करो। बोलो, जो डूड में पानी मिला के बेचटा है। समज गया ?

दीन-। खोदाबन्दो, पीछे कूच गाड़ बाड़ होवे तब ?

रो। कूच गरबर नेई होगा? अम है कि नेई? सरसरी टजवोज़ करके उसको टीन महीना बांड डेगा, फिर क्या? इसका तो अपील बी नई है? अमको राय में गवाही बी लिखना नई परेगा। ओहो, होहो—– क्यों डीननाट, यह कैसा आछा टजवीज़ है।

दीन०। हां धर्मावतार, यह तजवीज ठो आप लोग का ओग्राश्ते बहुत आछा है।

एक कैदी और एक औरत को लिये हुए दो कौन्स्टेबलका प्रवेश।

१ला कौन्स्टेबल-। खुदावन्द, यह वही महदेवा चोर है, आज बड़ी बड़ी मुश्किलों से पकड़ा गया है।

रो। वह ओरट कौन?

२रा कौन्स्टेबल। खुदावन्द यह उसकी जोरू है। दो एक चीज़ें इस के पास भी निकलीं, इसी लिये इसको भी पकड़े लाया हूं।

री। (उस औरत को बार बार झुक झुक के देखना।) ख़ूब अच्छा काम किया? उस के डुलहा की सब बाट इसी से खुल जायगा। (दूसरे कौन्स्टेब्ल से) डेकी उसको उस कमरा में ले जाओ।

क़ैदी। (घबरा के) धर्मावतार जे कुछ पूछि के हई होयें पूछ ल। कोठरिया में भला काहेला ले जा ह?

१ला कौन्स्टेब्ल। चुप रह, चोर कहीं का? (क़ैदी को मारना।)

री। (औरत से) टुम चलो आ, कूच डर नेई।

औरत। (रोती रोती) मइयो गे मइयो, हमरा कहा दी जायला कह हथिन। हम अकेले न जइबई गे मईयो।

री। चलो आओ। कूछ डर नेई है।

[री साहबका ज़बरदस्ती घसीटते हुए औरतको ले जाना।]

क़ैदी। हमरा सक मालूम पड़ हई। साहब, हम्मर घरवा के जनिया के कहां ले ले जा ह-थिन। हमरा से आंख के सामने ई न देखल जई-तई। (अचानक से हाथ छुड़ा कर री साहब के पीछे दौड़ना।

दीन-। पकड़ो, पकड़ो, पकड़ो ग्राला को—

[सब कोद गये।

चौथो झांकी।

बाढ़ —— ग्रमग्राद का मकान।

(हमीदा और ग्रमग्राद बैठे हैं।)

हमीदा। (डर से धीमी आवाज़ कर के) ऐ भइया बदला लेना क्या अच्छा है?

ग्र-। लेकिन यह तो बदला लेना नहीं हुआ। —— इस को तो बदमाशों की सज़ा करनी कहते हैं।

ह-। जब कचहरियां मौजूद हैं और नालिश करने से वहां इन्साफ़ हो सकता है फिर सज़ा देने का बार अपनी गरदन पर लेना क्या लाज़िम है?

अ-। कचहरियां हैं तो सही पर नहीं हो कह-ना चाहिये। —— अपने हक़ की पहिचानना, अ-रीर और बदमाशों से अपने तईं बचाना, यह इख़्-तियार नेचर के रू से सबको है। अपनी हिफ़ाज़त करनी यह नेचर के आईन का पहिला दफ़ा है। पर है क्या कि सिविलिज़ेशन के बढ़ने से मुल्क के सब लोग एक राय हो कर चंद आदमियों पर अवाम की हिफ़ाज़त का बार दे देते हैं। ताकि इन्तिज़ाम-इ-रियासत अच्छी तरह हो सके। वह चंद भी क़सम खा कर इस इन्साफ़ के बार को सरपर उठाते हैं। अब अगर ये चंद क़सम खाने का लिहाज़ न रक्खें, ज़ालिम हो जावें ख़ुदग़रज़ और नफ़्सपरस्त हों, स्याह और सुफ़ेद चमड़ों का फ़र्क़ रक्खें, फिर वह इन्तिज़ाम-इ-रियासत रहा कहां? जब कि अइयाश फ़ज़ूल ख़र्च छोकड़ों पर सरकार एक ज़िले की ज़िले का बार दे देती है, और इन छो-कड़ों के ज़ुल्म सुन सुन कर सरकार बहरापन का छ लेती है तो इस हालत में ख़ामोशी इख़्तियार कर-नी सरासर बेवक़ूफ़ी और बुज़दिली है, बलकि गु-नाह है।

ह-। सबही कचहरियों में यह बेइन्साफ़ी नहीं है। क्या अंगरेज़ बहादुर के राज में इन्साफ़ हई नहीं। अगर यहां बेइन्साफ़ी हुई है तो पटने में अपील करो, वहां ज़रूर इन्साफ़ होगा। फिर जुल्म कबतक ठठेगा पाप का बेड़ा एक बार न एक बार डूबहोगा। रात क्या हमेशा रहती है। आखिर दिन भी तो होता है। हमारो राय तो यह है कि उससे बिगड़ना अच्छा नहीं। फिर वह हाकिम है और तुम रअइयत हो, उससे कहां तक लड़ोगे? उपका राज है, शहरका शहर उसका सा बोलेगा, तुम्हारी तरफ़ से कोई बोलनेहारा नहीं। (सिसकके) जो हुआ सो हुआ, अल्लाह रक्खे, तुम बच तो गये? अब क्यों नाहक़ भिड़ोंके छत्ते को छेड़ते हो? हमारी तो राय है कि बदला लेनेकी निस्बत ग़म खाना बिहतर है।

श-। (ज़ोरसे) ग़म खाना! ग़म खाना!! ——ख़बरदार हमारे सामने फिर ग़म खानेका नाम मत लेना। इस लफ़्ज़के सुननेसे हमारे बदनमें आग लग जाती है। (दांत पर दांत ससमसाके) इसी ग़म खानेके पीछे अपनी आज़ादी

खो बैठे, इसी ग़म खानेके पीछे इन सुफ़ेद क़ौमों की गुलामी इख़्तियार करनी पड़ी, इसीके पीछे यह सोना सा अपना प्यारा हिन्दुस्तान हाथों से निकल गया, फिर उसी ग़म खानेका ज़िक्र करती है ?

हमो-। (डरके, जी में) मैं ठहरी औरत, और ये मर्द, भला इनसे मैं बहसने क्या बैठी हूं ? इनसे भला मैं कभी बहसमें जीत सकती हूं ? (नैपथ्यकी तरफ़ देखके) खैर, अब कुछ पर्वा नहीं, भइयाके गुस्सेकी दवा चली आती है । सोसनको देखते ही भइयाका सब गुस्सा बादलकी तरह फट जायेगा। (ज़ाहिर।) भइया, भइया, सोसन आती है ।

ग़-। कौन, सोसन आती है ?— अ—च्छा।

हमो-। (जीमें) भइयाको हुआ है क्या ? अल्लाह, सोसन के लिये भी इस क़दर बेपरवाई ?

ग़-। (जीमें) ज़रा चुपका हो कर बैठूं,—— देखूं तो सही सोसन आकर क्या करती है ? अभी तो इम्तिहान हो जाता है !——और क़ैसर भी उसके साथ ही है, वह भी देखेगा कि सोसन

मुझको कितना चाहतो है ? (करवट बदल के सोना।)

(सौसन और कैसर का प्रवेश।)

कै-। (एक तरफ़, सौसन से) सौसन,तूने देखा, तुझे देख कर मियां ग़मग़ाद ने मुंह फेर लिया। उनकी तबिग्रत ऐसी बदमज़ें है कि वह तुझको भी देखना नहीं चाहते। ख़बरदार, उनको ज़ियादा मत बकाना।

[गया।

हमी-। (सौसन के नज़दीक आकर अपने दोनों हाथों से उसके दोनों हाथ थांभ कर) आओ बीवी, यों आओ।

सौ-। वह ऐसे क्यों पड़े हैं ? उनकी तबिग्रत क्या बहुत ही बदमज़ा है ?

हमी-। (मुस्कुरा के) उनही से पूछ क्यों नहीं लेती ?

सौ-। बुआ, तुम्हें तो हर घड़ी दिल्लगी सूझती है। ख़ैर लो, मैं ही पूछती हूं। (दो एक क़दम आगे बढ़ कर ग़मग़ादसे) तबिग्रत कैसी है ?

ग़-। है, यों ही कुछ।

सौ- (सिसकती हुई, जीमें) हाय, हाय, मेरी तरफ़ एक बार फिरके देखते भी नहीं ! मुझे रुलाई चली आती है।

श- । (जीमें) फिर कुछ बोली न क्यों ? (ठंढी सांस ले कर) तब कैसर क्या सच ही कहता था ? न: न: ऐसा क्या होगा ? ऐसा जो खयाल करता हूं तो जान निकलने लगती है। —— सौसन हमारी ही है।

हमी- । (जीमें) जबसे साहबसे लड़ाई हुई है, तबसे न मालूम भइयाकी तबिअत कैसी हो गई है। सौसनसे भी भर मुंह नहीं बोलते। सौसन के जीमें इस वख़्त न मालूम कैसा गुज़र रहा होगा ?

सौ- । (आंख बन्द करके बड़ी धीमी अवाज़ से) तब क्या मैं इस वख़्त जाऊं ?

श- । (जीमें) तुरत ही जाना भी चाहती है। क़ैसर की बातोंको बिल्कुल झूठ समझ लेना, हमारी ग़लती थी।—तो क्या सौसनकी मुहब्बत आज तक महज़ ज़ाहिरी ही थी ? जिस वक़्त यह सोचता हूं जान तनसे निकलना चाहती है। हा, वह मुहब्बत

कैसे खूलूं ?—खुदाया, आखिर क़िस्मत में हमारे यही बदा था ? (ज़ाहिर।) जाओगी तो जाओ।

सो-। (आंखमें आंसू भर कर) बुआ, तो बंदी रुखसत होती है।

हमी-। (सोसन के हाथ पकड़ कर) जी, मैं जाने देती हूं न ? इतनी देर तक भी आप ठेरी क्यों थीं। योंही खड़े खड़े लौट जाना था तो फिर आने की क्या ज़रूरत थी।

अम-। (हमीदासे) हमीदा, ज़रा मैं बाहर फिरने जाता हूं।

[गया।

सो-। बुआ, मुझसे अभी बोलो मत। (हमीदाके कांधे पर सिर रख कर आहिस्ते आहिस्ते रोना।)

हमी-। उइ बीवी, यह क्या ? दीवानी हुई हो क्या ? (आंचलसे आंख पोछके) ऐ है, तुम अक़्ल-मंद हो के यह क्या ग़ज़ब करती हो ? देखो, हमें खाओ जो रोओ तो ? सुनो, उस दिन उस जोगन ने जो गीत गाया था उसे ज़रा गाओ तो, वल्लाह।

स-। हमें इस घड़ी गीत राग नहीं सुहाता।

हमी-। वल्लाह, सच कहना, कबसे? अच्छा, ज़रा खुदा के वास्ते हंस तो दो।

सो-। बुआ, अभी तो तुम्हें हमारा रोना दिल-लगी मालूम होता है, पर जब खुदा न ख़ास्ते, वख़्त आवेगा, तब समझोगी।

हमी-। अस्तग़फ़ुरुल्लाह, भला मैं क्या समझूंगी? मुझे तो शादीही करनी पसंद नहीं है। नाम तो इसका "शादी" है, लेकिन सच पूछो तो यह दुनिया के हर तरह के रंजों की दादी है।

सो-। अल्लाह रे, बुआ हमारी सदा कुआंरी ही रहा चाहती हैं। देखना ही तो है। ख़ैर, मैं अब जाती हूं, मुझे यहां आये बड़ी देर हुई।

[दोनो गईं।

पांचवीं झांकी ।

मौलवी हियात बख़्शका मकान।

(कैसर और मौलवी हियातबख़्श का प्रवेश ।)

हिया०। कहते तो हो अभी, पर पीछे न मालूम क्या होते क्या हो जाय ? शमशादका मिज़ाज कुछ और तरहका है। जिन जिन लोगोंने अंगरेज़ी पढ़ी उनकी जो अदा देखिये सो निराली। हमें तो बहर हाल उसीसे शादी करनी मन्जूर है। खुदा न ख़ास्ते कहीं वह भटक गया तो लाख सर धूनोगी, फिर वह खुदा का बन्दा माननेका नहीं।

कै०। नाना, अब हमारी अक़्ल काम नहीं करती। जो आपके जीमें आवे सो कीजिये। यह क़सूर आपका नहीं है, बुढ़ापेमें सबही की अक़्ल योंही ख़ब्त हो जाया करती है। इन्सान कुछ भी हया शरंम रखता हो, तो उससे कुछ बोलिये। भला आपको कुछ भी अपने बेगानेके हंसनेका

ख़याल है? यह आये दिनकी युक्म फ़ज़ीहती कैसे आपसे बरदाश्त होती है? ग़मग़ादकी बातोंका भला कुछ भी तो याप हो? वह बरसों से आपको फ़िक़रे दे दे कर आपकी रुसवाई करा रहा है। और आपको होश तक नहीं। यह आप खूब समझ लेवें कि जब तक कुछ धमकी उसको न दिखलाइयेगा, वह हरगिज़ शादी नहीं करेगा।

हिया·। सुनो बेटा, ख़फ़ा न होओ। जो कहोगे वह करूंगा। अव्वल तो मैं अक़्लमन्द कबका, दूसरे रही सही अक़्ल भी वाक़ई ज़ईफ़ी की वजह से बिलकुल ख़ब्त हो गई है। देखो, बेटा कहो तो, और नाती कहो तो जो कुछ कि हो सो तुम्ही हो। तुम्हारी सलाह न लूंगा तो लूंगा किसकी? तुममें अभी जवानी का जोश है, ज़राकी ज़रामें ख़फ़ा हो जाते हो। अगर इसी बातको मुझे समझाके कहते, तो मैं कितना खुश होता, और कितनी दुआयें देता? अलबत्ते तुम्हारा कहना मुझे पसन्द आया, और फ़िलहक़ीक़त अब ख़ौफ़ दिखलानेके सिवा और कोई चारा नहीं। मीठी बातों से बरसों समझाता

रहा, आख़िर नतीजा यही हुआ कि उसने शादी न की पै न की। सच है "लातोंके भूखे क्या बातोंसे सुनेंगे?" देखो क़िस्मत इसीको कहते हैं। ऐसा ससराल और सोसनसी दुलहन पर्दे ज़मीन पर उसे कहां मयस्सर होगी? ——अच्छा क़ैसर, इससे सोसन को तो नहीं नागवार गुज़रेगा?

कै। (हंसकर) नाना, वही मसल है कि "अंधा मांगे दो आंखें।" भला सोसन को, और नागवार गुज़रे। पन्द्रह सोलह बरसकी लड़की ——धधकती आग——उसे और उसके ब्याहकी बात पसन्द न हो? आप कहेंगे कल तो वह आज ही शादी कर लेने पर राज़ी हो जायेगी।—— फिर आपको ख़ोफ़ किसका है? अगर बात अच्छी है तो खुदा रसूलका भी डर नहीं। वह भी मदद करेंगे।

हिया-। अच्छा तब ग़मग़ाद को तो ज़रा बुलवा भेजो।

कै-। (खुश हो कर) बहुत खूब।

[जाना।

हिया-। (ग़ौर करता हुआ) क्या करूं, क्या

नहीं करूं। हमारी इस वक़्त सांप छूछूंदर की हालत हो गई है।—क़ैसर भी कुछ बेजाय नहीं कहता है।

(क़ैसरका प्रवेश।)

क़ै-। मियां ग़मग़ाद पहुंचे। (धीरेसे) देखिये, हंस हंसके बात न कीजियेगा।

(ग़मग़ाद का प्रवेश।)

ग़-। जनाब, आदाब अर्ज़ है।

हिया-। जीते रहो। आओ, बैठो। अजी कभी-इधर आते जाते भी नहीं? कहो, तबिअत तो अच्छी रहती है न?—— मियां तुमसे एक बात की सलाह पूछनी है।

ग़-। हुजूर की दुआसे तबिअत बहुत अच्छी है। —— जनाब, बन्दा किस लाइक़ का है, कि इससे सलाह ली जायेगी। हां, अलबत्ते जो इर्शाद कीजियेगा, उसके बजा लाने में क़ासिर न हूंगा।

हिया-। देखो ख़फ़ा न हो तो कहूं?

ग़-। तोबा तोबा, भला मैं आप पर ख़फ़ा हूंगा? आप बेतकल्लुफ़ फ़रमायें।

हिया-। देखो, सौसन की उम्र तो रोज़ रोज़

बढ़ती ही जाती है। अब उसे बिना ब्याहे मैं घर पर नहीं रख सकता। क्यों, है या नहीं? ज़ात-बिरादरी सब के सा ही हंस रहे हैं। जानते ही होगे, भला तुमसे कुछ छिपा है? सो बिरादर, तुम अपने दिल की बात अब खोल कर कहो— तुम्हें क्या मन्जूर है? अगर शादी करनी है तो साफ़ कहो, और नहीं तो वैसा कहो, कोई दूसरी राह देखूं। सिर्फ़ तुम्हारी नेक-चलनी की वजह से तुम्हारे लिये लट्टू हो रहा हूं, वरना अमीर जो पूछो तो एक से एक पड़े हैं।

कौ०। (जीमें) आः खाः, नव्वाब साहब का चिहरा देखो, लाल हो गया। अल्लाह रे, यह दिमाग़!

श०। सौसन की राय भी क्या ली जा चुकी है?

हिया०। किस बात की राय? — राय कैसी?

श०। इसी बात की, कि अगर मैंने शादी न की तो किसी और अमीर से शादी हो।

हिया०। उसकी राय क्या? जो मैं करूंगा, उसे कबूल ही करना पड़ेगा।

श०। (नीचा सर किये) तब भी उससे कुछ तो पूछा होगा?

कै-। (आंख से इशारा करता है कि "कह दो हां")

हिया-। हां, उसको भी पछवाया था, उसने ऐसा कुछ साफ़ नहीं कहा, लेकिन वह राज़ी हो जायेगी। ——कितने नव्वाबों के यहां से —— (घबरा कर) वाह, वाह, खैर तो है, चले कहां? ए—ए—ए तुम्हें हमारे सर की क़सम, ज़रा सुन लो। —— क्या, क्या हुआ ——

श-। (कहता कहता जाता हुआ) इसी बात के सुनने का मैं मुन्तज़िर था। बस हो चुका। किसी नव्वाब ही से उसकी शादी कीजिये। मैं आप की पोती के लाइक़ नहीं हूं। बन्दा रुख़सत होता है।

[प्रस्थान।

हिया-। यह क्या! जो कहोगे वही करूंगा। सुनो, सुनो —— (थोड़ी दूर तक दौड़के जाना फिर लौट आके और झुंझला के कैसर से) लो हुआ न? जो सोचा था वही बात फिर पेश आई? सिर्फ़ तेरी बातों में पड़के मैंने सब खोया। मैं अपने लड़के के सामने क़यामत में क्या मुंह दिखलाऊंगा? कैसर, तूमने हमको हर तरह

से सत्यानास किया।—उफ़, अब क्या हो सकता है! ग़मग़ाद के मिज़ाज से मैं खूब वाक़िफ़ हूं। वह टर्रा क्या अब माननेवाला है? और सोसन ने कहीं इस माजरे को सुन पाया, तो बिला शक वह गलेमें फांसी लगा कर मर जायेगी।—उफ़! अब क्या हो! क़ैसर, अरे तूने क्या किया? हाय, हमारी अक़्ल में क्या हो गया था!

कै०। आप क्यों नाहक़ इतना घबराते हैं? आप ठंडे हूजिये। देखिये वह ख़ुद बख़ुद दौड़ा आता है।

हिया०। "क्यों नाहक़ इतना घबराते हैं?" अभी तो इतना ही हुआ है, न मालूम आगे को तू हमारी ओर कौन कौन गत करेगा। जा दूर हो, जा निकल जा मेरे घरसे। है, है, मेरी अक़्ल में क्या हो गया था! देख, जैसे बने समझा के बुझा के जैसे हो वैसे मना के ले आ। देख इसीमें ख़ैर है, नहीं तो वल्लाह, आज मैं अपनी जान न रक्खूंगा।

[झुंझलाता पैर पटकता गया।

कै०। (अपनीपीठ ठोकता ठोकता) वाह रे मैं।

क्यों न हो! आख़िर अपना क़ौल पूरा किया न? अमग़ाद की यह हालत हुई, और नाना की यह। सिर्फ़ यह छोकड़ी बड़ी पक्की पिंड है। हमारी बातों ने सिर्फ़ इसी को कुछ असर न किया?—— लो देखो, नाम ही लेते पहुंची न?——

(सोसन का प्रवेश।)

उस दिन मैंने कहा तो तुझे यक़ीन न हुआ था, कि मियां अमग़ाद का जी अब तुझ पर नहीं है। ले, अब तो यक़ीन करेगी? आज खुल कर नाना को जवाब दे गये कि "अपनी पोती की शादी और किसी से कर लीजिये, मैं अब रुख़सत होता हूं।"

सो-। ऐं क्या——क्या——क्यों, ऐसा क्यों कहा——क्या कहा?

कु-। "क्यों" "क्या"? मैं पैग़म्बर तो हूं ही नहीं, कि उनके दिल की बात कह सकूं। अलब-त्ता मैंने इतना तो देखा कि नाना कह रहे थे कि "सोसन की उम्र रोज़ रोज़ बढ़ती ही जाती है, सो नाहक़ देर करने की क्या ज़रूरत? अगर शा-दी करनी है तो जल्दी ही क्यों नहीं कर लेते? मैं भी क़ब्र में पांव लटकाये बैठा हूं, तुम लोगों का

ब्याह देख लेता तो यह भी हौसला पूरा हो जाता। और क्या ?" इतने का कहना था कि, खुदा मालूम, कौन सी बात इस में बुरी थी, कि जिसकी वजह से मियां अमशाद मारे गुस्से के लाल पीले हो गये। यह बकते चले गये कि "मैं आपकी पोतीके लाइक़ नहीं हूं" यानी, समझी कि नहीं, कि तू उसके लाईक़ नहीं है। "आप किसी और से उसकी शादी कर दीजिये !" नाना लाख पुकारते रह गये, पर कौन सुनता है ? फिर तो यह गये, और वह गये। (जीमें) आंखें डबडबा न आईं।

सौ-। (आंसू टपकाती, सर नीचा किये सिसकाती हुई) इसमें भी क्या कुछ शक है कि मैं उसके लाइक़ नहीं, लेकिन यह कैसे यक़ीन हो कि उसने दूसरी जगह मेरी निस्बत ठहरा लेने कहा।

कै-। (गुस्सा दिखला कर) क्यों री, तो क्या मैं तेरे नज़दीक झूठा हूं। तेरहवीं सदी में भाइयों की ऐसी ही इज़्ज़त न होगी। (पांव पटकता जाता है।)

सौ-। (आंसू पोछ कर) भइया, भइया, मुझपर गुस्सा न होओ। सुनो, सुनो—— !

[पुकारती पुकारती कैसर के पीछे पीछे चली गई।

छठी झाँकी।

बाढ़—स्टेशन के नज़दीक एक बाग़।

(ग़मयाद का प्रवेश।)

ग़-। अभी गाड़ी के आने में घंटे दो एक की देर है। तब तक यहीं ठैरूं।——बैठ जाऊं। (बैठ कर) पटने जाकर एक मकान किराये पर ठैरा के लौट आऊंगा। तब हमीदाको साथ ले जाऊंगा। दोनों भाई बहन बराबर वहीं रहेंगे। हमीदा तो हमारी दूसरी नहीं होगी। मुहब्बत कहिये तो बहन की अलबत्ता। वहां जाऊंगा, दोस्तों से मुलाकातें होंगी, जी बहल जायेगा। थाईन के क्लास में नाम लिखवा दूंगा, एक बरस का लेक्चर जो बाक़ी है, सो भी पूरा हो जावेगा। (सर नीचा किये बैठा सोच रहा है।)

(अंगरेजी बाजों का बजना।)

(रो साहब का कोड़ा लिये, और दोननाथ का प्रवेश।)

रो। वल डीनोनाट, डेखो ऐसा बाग कबी टुम डेखा, और ऐसा बाजा कभी सुना? हिन्दुस्तानी राज में ऐसा ऐश कबी टुम को मयस्सर होटा?

दिन-। ना धर्मावतार, कहां से होता?

रो। (शमशाद की तरफ़ देख कर) कौन आदमी यहां बैटा है? डेखो, सलामकी कौन पूछटा है, सूअर बेहूडा अम को डेख के खरा भी नहीं हुआ। ——साला आधा जंगली डेसी लोग को क्यों इस बागमें आने डेटा है?—(शमशाद के पास जाकर, जूतेकी नोकसे ठोकर देकर, तानेकी आवाज़से) अहा, जनाब आली आप कौन हैं? (शमशाद मुंह उठा कर देखना।) कौन शमशाड, वल टुम डोज़क से क्यों फिर आया? डेखो टुम बरा बुरा काम किया। (शमशाद पर कोड़ा चलाना।)

श०। अबे नालाइक़, यह ज़ख्म पर नमक छिड़कता है? तुझीको वहां भेजने के लिये मैं दोज़ख से लौटि आया हूं। (रो साहब के हाथ से कोड़ा छीन, ज़मीन पर उसे पटक, उसके सीने पर चढ़ के)

उस दिन की दग़ाबाज़ी का यह इनआम है। (एक बार कोड़े से मारना।)

दिन·। ओ पहरा वाला, ओ पहरा वाला——

[पुकारता पुकारता गया।

श·। आज जो तूने मुझे लात मारी, उसके लिये यह एक यह दो। (दो बार कोड़े मारना।) तूने मुझ पर कोड़ा चलाया उसके लिये यह एक, यह दो, यह तीन। (तीन बार मारना।) और सबका सूद यह एक, यह दो, यह तीन, यह चार। (चार बार मारना।)

[कोड़े को दूर फेंक के भाग जाना।

रो। (बड़ी बड़ी मुश्किलों से उठके) यू शैल हैव टू पे डेविली फ़ोर दिस, बॉय ऐन्ड दैट एयर ऐनदर सन सेट्स*।

(दिननाथ का प्रवेश।)

दिन·। आला कांहां गोया? कोधर गोया, कीधर? खोदावन्दो हाम तो ——

---

*इस बात के लिये दूसरे सूरज के डूबने के पहले ही तुम से पूरा बदला लेंगे।

रो। (गुस्से के अंधा हो के) यू सूअर निमक-हराम, खरा रो साला——

(दिननाथ को मारने के लिये उसे रो साइक का रगेदना, ओर दिननाथ का भागना।)

नेपथ्य से। (रोवासी आवाज़से) मा-गो, मा गो, रक्खे कोरो, रक्खे कोरो। खोदावन्दो, हामारा कशूर नेई, ——उ, उ: उ: ——खोदावन्दो, उ: उ: उ: ——दोहाई प्रभु, एक दमसे मेरे फेलबेन ना। ——ओ, ओ, ओ, मोलाम, मोलाम ——आ:, मा गो——

तीसरा अंक ।

पहिली झांकी ।

पटना—एक अशराफ़ का मकान ।

अशफ़ाक़ बैठा है।

अ-। मैंने क्या कुछ बेजाय किया ? फ़ाहिशा और किस को कहते हैं !—अब वह हमारी कौन ? ऐं, वह अब दूसरे की हो गई ! हाय यह, क्या हो गया ! —उफ़, यह दग़ाबाज़ी !—यह फ़रेब !—यह मकर ! अफ़सोस, सद अफ़सोस, कि मुझे इख़तियार नहीं ? वरन इसको ? इसको तो मैं बोटी बोटी करके मरवा डालता। फिलहक़ीक़त सोसन अब हमारी नहीं ? ——(हाथ मलके) वह मुहब्बत, क्या बिलकुल ज़ाहिरी ही थी ? नहीं हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं क्या —अबभी कुछ शक है—दूसरी

शादी कर लेने पर राज़ी हो गई?—अब क्या? उफ़ इतना फ़रेब!——

ख़ाने मालिक का प्रवेश।

ख़ाने मालिक। एक मकान तो मैं आप के वास्ते ठहरा आया हूं। मुरादपुर में—ऐं यह क्या, आंखें आप की इतनी सुर्ख़ क्यों हैं? कहिये तबिअत कैसी है?——(पेशानी पर हाथ रखके) माज़ अल्लाह बदन आप का बहुत गरम है। देखूं, नब्ज़ देखूं? इतने दिनों में बुख़ार का हो आना तअज्जुब क्या है? (नब्ज़ देख कर) बड़े ज़ोर शोर का बुख़ार है! कुछ पर्वा नहीं, जल्द उतर जायेगा। लीजिये, अब तो जाना आपका आज बन्द रहा।

अ-। जी नहीं, बुख़ार नहीं है। सिर्फ़ रास्ते की हरारत है। शाम तक तबिअत सही हो जायेगी। आज मकान तो ज़रूर ही जाऊंगा। हमीदा वहां अकेली है।

ख़ा- मा-। इस हालत में मकान जाने की सलाह मैं तो हरगिज़ नहीं दे सकता। ख़ैर, इस वक़्त तो ज़रा चल कर लेट रहिये। फिर देखा

जायगा। चलिये, उठिये।

(ग्रमशाद का हाथ पकड़के ले जाना।)

दूसरी झांकी।

बाड़ — मौलवी हियात बख़्श का मकान।

[हाथमें ख़त लिये सौसन का प्रवेश।]

सौ- । (रोती हुई) आख़िर फिर यही हमारी क़िस्मत में बदा था? मैं फ़ाहिशा ठहरी? बेवफ़ा, तेरे मुंह से कैसे यह बात निकली? (आंसू पोछती हुई) शमशाद, मैं तो तुझ सिवा और किसी को नहीं जानती। तू ही हमारा दिल है — तू ही हमारी आंखों का तारा है।— तेरे ही लिये मैं ने शर्म को ताक़ पर रक्खा, तेरे ही लिये अपने यगाने बिगाने सब को छोड़ा — और तेरे लिये मैं धन दौलत, घर बार सर्बस छोड़ सकती हूं, और हाय हाय तू ऐसा बेदर्द निकला कि मेरी शान में ऐसा लफ़्ज़ कहा! (रोना) शमशाद, तुझे मैं बहुत ही प्यार करती हूं एक बार जो तेरा मुखड़ा देखती हूं तो मारे ख़ुशी के फूली नहीं समाती। है, है, तूने मुझे फ़ाहिशा कहा! इस लफ़्ज़ के मुंह से निकालने में तुझे ज़रा रहम न आया, शमशाद? (रोना और चिट्ठी का पढ़ना।)

"तुम्हारा और हमारा जो रिश्ता था वह अब हमेशे के लिये छूट गया। तअज्जुब क्या है! बूढ़े दादा की लाड प्यार ने तुम्हें बिल्कुल आवारे बना दिया है। ऐसी हालत में तुम्हारा फ़ाहिशा होना कुछ तअज्जुब का मक़ाम नहीं है!" (रोना।)

गीत।

रागनी बरवा ताल ठुमरी।

"अज़ीज़ो, क्या कहूं रोना मैं अपनी चश्मि गिर्यां का!
बहें कितने ही दर्यां गर निचोड़ूं पाट दामां का।
जनूं में देखियो रुत्बा मेरे हाले परीशां का,
क़दमबोसी की आया चाक ता दामन गिरिबां का।
दिले पुर दाग़ की हालत ख़राबी से यहां पहुंची है,
निशां रह जाये ज्यों बाक़ी किसी उजड़े गुलिस्तां का।
न आया इस फ़लक को और कुछ, आया तो यह आया,
घटाना वस्ल की शब का, बढ़ाना रोज़ि हिज्रां का।
बतंग आई हूं मैं वहशी कहां दिल खोल कर रोऊं?
कि वहशत पर हमारे तंग है अर्सा बयाबां का।
हुआ यह ख़ुश तो अब लोगोंने उस की यह मुनादी की,
न वां जावे कोई यां का, न यां आवे कोई वां का।
किया इस इश्क़ की वहशत ने क्या दीवाना सोसन को,
अजब अहवाल देखा मैंने कुल इस ख़ाने वीरां का।"—जुरअत।

री। मियां ग़मग़ाड की बहन! वह आपका नोट चोराई। हरगिज़ ऐसा नेई होने सकटा। उनको किस बाट की कमी है कि आप का नोट चोरावेंगी?

दीन-। ग्रो हाम नेई जानता खोदावन्दो। बा-की उग्रका बिछाना में एई नोट ने तब कहां ग्रे ग्राया?

री। (हमीदासे) क्या आप कह सकटी हैं कि ये नोट आप के बिस्तरे में कहां से आये?

हमीदा। (ग़म, शर्म, और नफ़रत से क़रीब-उलमर्ग होके, धीमें) ज़मीन, तू फट जा, कि मैं तेरे दरारमें समा जाऊं।—— अब यह बेइज़्ज़ती नहीं सही जाती।

के-। मारे शरम के तो ये मरी जाती हैं, भला आप के सवाल का जवाब क्या ख़ाक देंगी? क्या यह मुमकिन है कि उस बंगाली के यहां ये चोरी करने गई' हों?

री। टुम कौन है?

के। इन के पड़ोसी और रिश्तेदार।

हिया-। खुदावन्द! मुझे इस शहर में सब

कोई पहचानते हैं। बन्दे की भी एक अर्ज़ है, अगर इर्शाद हो तो अर्ज़ करूं।

री। ओ यस, आप अर्ज़ करने सकटा है।

हिया-। खुदावन्द, बन्दे की दाढ़ी इसी क़स्बे में पकी। (दाढ़ी पर हाथ फेर के) सैकड़ों हाकिम यहां आये, और गये, पर हुज़ूर सा मुन्सिफ़ मिज़ाज हाकिम शाज़ नादिर देखने में आये।— इसी खयाल से इस कमतरीन को इतनी हिम्मत हुई कि जनाब-इ-आली की ख़िदमत में अर्ज़-पर्दाज़ हो। (हमीदा की तरफ़ हाथ दिखला के) मैं आप को खूब पहचानता हूं। शहर के रईसों में सब से बड़े रईस की आप साहबज़ादी हैं। यह मुमकिन नहीं कि इन से ऐसी हरकत-इ-बेजा सरज़द हुई हो। खैर, अगर दुश्मनों ने इन्हें माख़ूज़ कर के कचहरी में बुलवाया है, तो हुज़ूर को बाज़ाब्ते मुक़द्दमे की तजवीज़ करनी फ़र्ज़ है। लेकिन बन्दे की यह इस्तदुआ अगर क़बूल हो तो इहसान को बोझ से सर न उठा सकूंगा। यानी आज तो यह मुक़द्दमा किसी तरह फ़ैसल होता नहीं दिखाता। इन्हें ज़मानत पर छोड़ दिया जाये। मैं

ज़ामिन होने को मुस्तइद हूं। जितने की फ़ुरमाइयेगा, उतने की ज़मानत दे सकता हूं।

रो। मैं बरा अफ़सोस करटा हूं कि मैं आप की राय से मिलने नेईं सका। माल मस्‌रूक़े के साठ गिरफ़्तार ग्रडे चोर को टजवीज़ करने के पेश्तर छोरना अमारे अख़्टियार से बईड है —— टाज़िराट हिन्ड के बरकिलाफ़ होटा है। घरीब ग्रोर ग्रमीर डोनो को आईन एक ग्रांक से डेकटा है। इन्साफ़ की टराजू में इन डोनों को टौलने से कुछ बी फ़र्क़ नहीं परटा। इस लिये आज राट बर इन को हाजट में रहना परेगा। कल टजवीज़ के बाड जैसा होगा किया जायेगा।

(हमीदा का बेहोश हो के ज़मीन पर गिरना।)

के। यह बेइन्साफ़ी मैंने कभी नहीं देखी!

(हमीदाकी बेहोशी दफ़ा करनेकी तदबीरें करना।)

रो। लड़के, ज़बान संबाल के बोलो। डेखो कचेरी की टहक़ीर होटी है। (कोन्स्टेबलों से) वल, कचेरी साफ़ करो।

(कोन्स्टेबलों के डांटने से रो और दिननाथ के सिवा सब का निकाल दिया जाना।)

दिन·। (थर थर कांपता हुआ) खोदाबन्दो काम तो ही गीया पर डर श्री हामारा लोहू शूखा जाता है। एक तो ज लोग बड़ा आदमी है। दूसरे ग्रमशाद भी बड़ा फोसादी आदमी है।

रो। (मुसकुरा कर) यू कावर्ड, टुम मट डरो। शाम के बाड उसको वहीं बेजो — हूम ? उको कोई डेखने न पावे। —— (दिननाथ बहुत ही कांपने लगा) ब्लैक निगर नेटिव ! टुम क्या करेगा।

[दोनों गये।

चौथी झांकी।

बाड़ —— गंगा किनारेका पुराना मकान।

(एक कमरेमें हमीदा बैठी है।)

हमीदा। (हर दरवाज़े को, और खिड़की को धक्के दे दे कर देखलेने के बाद निरास हो कर)

ज़िन्दगी ले के क्या करना है। भइया, जाओ, जाओ देखो अगर रास्ते में मुलाक़ात हो जावे तो कौन्स्टेब्लों निगोड़ों को कुछ दे ले के बीवी हमीदा को घर ले आओ। भइया, अल्लाह का नाम लो, और जाओ। देखो अल्लाह ज़रूर मदद करेगा। दादाजान, भइया को हुक्म दो, और तुम भी साथ जाओ।

कै-। नाना, मैं जाता हूं। आप भी आदमियों को साथ लेते आइये। तुफ़ हम हिन्दुस्तानियों को! हाय, हाय, जब अपनी और अपने औरतों की इज़्ज़त ही न बचा सके, तो क्यों मर्द पैदा हुए थे?

हिया-। हां बहादुर, जाओ देखो, कुछ आदमियों को साथ लेते जाना। मैं भी फ़ौरन पहुंचा।

[जाना।

सौ-। (रोती रोती) या अल्लाह!—अब क्या होगा!

तीसरी झांकी।

वाढ़ —— मजिस्ट्रेटका इजलास।

इजलास पर दो साहब बैठे हैं।

हमीदा, कैसर, हियातबख्श, दिननाथ, कन्हाई
गोवाला, कईएक कौन्स्टेबल, और बहुतसे
लोग चारों तरफ़ खड़े हैं।

दीननाथ। (कन्हाई गावालेकी तरफ़ इशारा करके ।) खोदाबन्दी, एई गोवाला ठो हामको आगे बोला जो आशल खांटी दूध देगा, आर चार पोयशा शेर करके हाम दाम देने बोला। ओ अब पानी मिलायके दूध बराबर देता है, ओ ई पानी का मीला दूध खा के हामारा लेड़का वाला अब बेमार हुआ। हाम इश आदमीके बेनाम ठगाने का नालिश करता है।

रो। आप क्या खुड दूड मोल लेने जाया करटा टा ?

दिन ना खोदाबन्दो, एई चाकोर ठो लाया था।

रो। (दिननाथके नौकरसे) वल, टुम बाबूका दूड लाटा ?

नौकर। (सलाम करके) हां, खोदाबन्द।

रो। (कन्हाईसे) इसकी वरखिलाफ़ टुमको कुच बोलना है ?

कन्हाई। (हाथ जोड़के) दोहाई सिरकार के, हमतो इनखा चीन्हबो न कर ही, जे, ई के हथीन। सूरज देवता जाने हथ, हम दुधवा इनखे हाथ कधियो नई बेचलूं। आउर पनिया मिला के भला कहां से बेचबई ? (रोता हुआ) अपने गरीब के मा बाप हा ! जे चाहा से करा, हम भगवान के किर्या खाके कह हियो, ई नौकरवा के हाथ हम कधियो नहीं दूध बेच लूं। एकरे तनिक कड़ा करके पूछा, सब बतिया खुल जई तई। दोहाई धर्मावतार के।

रो। डीनोनाट बाबू एक अशराफ़ आडमी है, यह नौकर को सिकला परा के टुमारे वरखिलाफ़

मुकडमा लाविगा, ऐसा हम कवी इटमाड नई करने सकटा।—ग्रोर जूट क्यों ऐसा करेगा? उनकी क्या फ़ाइडा? — डेखो टगना बरा भारी जुर्म है।——जाग्रो डस बेट, ग्रोर डो मह्हीना बामिहनट केड हो।

कन्हाई। (रोता हुग्रा) दोहाई धर्मावतार की ...... दोहाई ...... एक बतिया ......

की स्टेबल। चल चल। गुल मत कर।

[कन्हाई को धक्के देता लेगया।

दीन-। खोदावन्दो, हामारा एक मोकद्दमा धाजर है। छोय माग्र हुग्रा कि हाजार हाजार रुपइया का दो कीता लोट हामारा हारा गीया था। बहुत ताह्लाग्र कीया, कहीं पावा नेई गीया। काल गोइन्दा ग्रि एक खावोर याया, ग्रार मोलवी ग्रामग्राद ग्राब का बाड़ी में खाना ताह्लाग्री कीया तो (हमीदा की तरफ़ हाथ दिखला के) इग्र ग्रोरत का बीछाना में ई दोनों लोट मीला। खोदावन्दो, लोट ठो एई है। (रो साहबके हाथ में देना।)

रो। वह कौन है?

दीन-। ग्रुंनता है की मोलवी ग्रामग्राद ग्राब का बोन है।

शमशाद अगर मैं तेरी नज़रों में बदकार ही ठहरी तो फिर अब मेरा इस दुनिया में जीना फ़जूल है। मैं अब तुझ से रुखसत होती हूं। खुदा देख, उसका जो जी चाहे समझे, पर मैं उसी की हूं, और उसी के लिये अपनी जान कुर्बान करती हूं। शमशाद, अगर क़यामतमें भी अपनी इस लौंडी की तरफ़ आंख उठा के देखेगा, तो मैं अपने तईं बहिश्त में समझूंगी। (रोते जाना, और खूंटी में डोर लगाके गलेमें फांसी लगाना, और टंगने के लिये सामान करना।)

नेपथ्य से क़ैसर। सौसन, ज़रा किवाड़ी खोल तो।

सौ-। (रोती हुई) भइया, ज़रा लौट आओ।

क़ै-। यह क्या, रोती क्यों है? — लौट आऊं क्यों? नहीं किवाड़ी खोल। (धक्के देना) वल्लाह, खोल जल्दी।

सौ-। बराय खुदा, ज़रा दम लो।

क़ै-। नहीं, हरगिज़ नहीं, मैं नहीं ठहर सकता। खोल जल्दी, खोलती है या नहीं? (फिर धक्के देना।) अरी, जल्दी खोल। वाह वा, यह

क्या बात है, जवाब क्यों नहीं देती ? — ज़रूर कुछ दाल में काला है —हमें शक होता है। खोलना है तो खोल, नहीं तो किवाड़ियां, क़सम कलामुल्लाह की, तोड़े डालूंगा। अब नहीं ठहर सकता। ले देख, (ज़ोर से लात मारके किवाड़ियों को तोड़ के प्रवेश। और घबराके) या अली, या अली, यह क्या! (डोर काट के और सौसन को उठा के बिठलाना।) सौसन यह तू क्या करने चली थी? (जीमें) लाहौलवलाकूवत यह ज़रा सी बात बढ़ कर "फुसरी का भोकन्दर" हो गई। अल्लाह मैं नहीं जानता था कि आख़िरी नतीजा हमारी दिल्लगी का यह होगा। ख़ैरियत हुई कि मैं ऐन वक़्त पर इत्तफ़ाक़न पहुंच गया। वरन हमारी दिल्लगी तो सौसन की जान की गांहक ही हो चुकी थी। आज से मैं अपने (कानोंको ऐंठना।) कानोंको ऐंठता हूं फिर कभी नहीं ऐसी दिल्लगी करूंगा। (ज़ाहिर।) हमारा कलेजा धड़क रहा है। सौसन, यह ज़रा सी बात के लिये तू जान देने चली थी ? छी, छी, ऐसी ऐसी बातों

में भी लड़कपन! मारे खौफ़के मैं वल्लाह, थर थर कांप रहा हूं। (सोसनकी आंखों पर पानी छिड़कना, और पंखा झलना।) सोसन, यह क्या तुझे सूझा था? — है, है, बोलती क्यों नहीं? हमारा सर घूम रहा है। —— खुदा के लिये ज़रा बोल भी सही — जाऊं, नाना को बुला लाऊं।

[जानेकी तइयारी।

सो-। (धीमी आवाज़ से) भइया, अब कुछ परवा नहीं, मैं चंगी हो गई। दादा जान से इस माजरे का हाल कहना क्या ज़रूर है?

कै-। (सोसन के नज़दीक बैठ के) सोसन, अब हमारी जान में जान आई। लाहौलवला कूवत, क्या तुझे सूझा था? (जीमें) नाना ठीक ही कहते थे। एक अदनी सी बात इस क़दर बढ़ गई!

नेपथ्यसे हियातबख़्श। कैसर, दौड़ दौड़, बड़ा जुल्म हुआ! बड़ा ज़ुल्म!

कै-। क्या, क्या? क्या हुआ! क्या हुआ!

(ज़ियातबख़्श का प्रवेश।

ज़िया-। अल्लाह, अल्लाह, इस तरहका ज़ुल्म न कभी सुना, और न कभी देखा। ग़मग़ादकी बहनको थानेवाले पकड़े लिये जाते हैं।

सौ-। (रोके) या अली, यह क्या आफ़त आई!

का-। (घबराके) किस वक़्त ले गये,—— कैसे ले गये,——क्या दरवाज़े पर कोई आदमी न था?

ज़िया-। बस अभी फ़ौरन, अभी तो रास्ते ही में होंगे। मुझे क्या मालूम, मुझसे बख़्शाने आ कर कहा। अजी, दरवाज़े पर आदमी ही होते तो क्या करते? पांच छ आदमियोंसे पचीस तीस कानिस्टबिलों के सामने क्या बन पड़ता है? अल्लाह, हमारी इतनी बड़ी उम्र हुई लेकिन आज तक ऐसा ज़ुल्म कभी नहीं देखा था।

सौ-। भइया, तुम ज़रा जाओ। जाओ, देखो, ——या ख़ुदा, यह क्या हुआ!—दादाजान, यह इज़्ज़त का बारा है, देखो जैसे वह अशराफ़ वैसेही हमलोग। अगर उनकी इज़्ज़त गई तो क्या हमलोगों की बाक़ी रही? और जब इज़्ज़त गई तो फिर यह

सब ही दरवाज़े तो बाहर से बन्द हैं, खिड़कियां भी बाहर ही से बन्द हैं। अब क्या करूं! किधर जाऊं। (रोती रोती) खुदाया! हमारे बचने की क्या कोई तदबीर नहीं है? सिवा मरने के इस दोज़ख़से निकलनेकी क्या कोई राह नहीं है? हाय अल्लाह, हमारी क़िस्मतमें क्या इसी उम्रमें मरना बदा है? (आंसू पोछती पोछती)---लेकिन मरने को भी तो कोई सहल तदबीर नहीं देखती। (दोपट्टे से गले में सरफांसी लगा कर) खुदा देख, मुझसे जो जो गुनाह इस दुनिया में——

(मशे में चूर रो साहब का भट प्रवेश।)

रो। (झूमता झूमता) हो हो हो! मैं बाहर से सब कुछ डेक रहा टा। अब टो कोई चारा नहीं, नाज़िनी? अब टो हमारी आघोशमें आओ। हो हो हो!——अम को डेक के कौफ़ क्यों खाटी हो, नाज़िनी? मैं टो न शेर हूं, न भेरिया। मैं टुम को खाऊंगा नहीं। सिर्फ़ टुमारी मुहब्बट का मज़ा चका चाहटा हूं।

हमी-। (रोती हुई) खुदा के लिये, मुझे मुआफ़ कीजिये। खुदा आप को सलामत रक्खेगा।

रो। हो, हो, हो! नाज़िनो, मुहब्बट की लुबट् में मुआफ़ लफ़ज़ नहीं।——और टुमारा इस में क्या बिगरटा है? फिर टुम अपने आशिक़ को क्यों नाहक़ टकलीफ़ डेटी हो? न जाने क्यों हमने आज टक ऐसी कोई डेसी नाज़िनी नेई डेकी, जो बघैर ज़बरडस्ती अपनी मुहब्बट अमको डे। इस की क्या वजह है खूबसूरट नाज़िनी? यह बुरी रस्म कब टुम लोग में से डप़ा होगी?

हमी-। (जीमें) खुदा करे यह "बुरी रस्म" हम लोगों में सदा बनी रहे। या खुदा किसी तरह जल्दी जान भी निकल जाय।

रो। क्या सोच रही हो, नाज़िनी? जो बाट कि ज़रूर होगी, उस के लिये सोचना क्या?—— नाज़िनी में भीक मांगटा है नाहक़ टक़डीया न डो।

हमी-। या खुदा तुझे क्या यही मन्जूर है कि मुझे यह अंगरेज़ इस बखुत बेइज्ज़त करे! इलाही, ज़रा मुहलत भी मिलती। क्या करूं? कौन सी तदबीर सोचूं।

रो। नाज़िनी, अब में टेर नहीं सकटा। अब

भी अर्ज़ करटा हूं कि अपनी मुहब्बट मुझे डी, नई टी मुझे ज़बरडस्ती भी मालूम है। •

हमी-। (सोच कर) अच्छा, आप एक काम क्यों नई करती? मुझ से शादी कर लीजिये।

रो। हो हो हो! खूब फ़रमाया, नाज़िनी। मैं बी टुमारे टहरीक की टाईड करटा हूं। पर एक बाट है कि हम लोग में अबी मुटा हो जाय।

हमी-। (तअज्जुब होके) सो क्या?

रो। हो हो हो! टुम मुसलमान हो बी मुटा नेईं जानटो, नाज़िनी? ज़िन्डगी बरके लिये शाडी नेईं होगी। एक राट या डो या कुछ और ज़ियाडे टुम और हम जोरू खसम की माफिक, रहेंगे। पीछे टुम बी आज़ाड और हम भी आज़ाड। यानी फिर टुम जिसको चाहो व्याह करने सकोगी, और अम बी सकेगा। हो हो हो, अम इसमें कूब राज़ी ऐ। अब आओ नाज़िनी।

हमी-। (जीमें) ज़मीन तू ही मुझे क्यों नहीं लील जाती? हाय, इस वख़्त मुझे मौत निगोड़ी भी नहीं याद करती? क्या करूं? ज़रा भी मुह- लत मिले तो उस दरवाज़े से भाग जाऊं।—अगर

कोई राह न मिली तो ऊपर ही से कूद पड़ूंगी, चाहे जान रहे चाहे जाय। (ज़ाहिर।) अच्छा टो तीन रातों के बाद अगर आपने मुझे छोड़ ही दिया तो फिर वह व्याह करना क्योंकर कहलायेगा?

रो। हो हो हो! नाज़िनी, उन्नइसवीं सदीमें इल्म और विज्ञानके रू से सब किस्मकी ग़ुलामी उठ गई! फिर यह शाडीकी ग़ुलामी क्यों रहे? (इतना कहके उसके पास जा कर उसे छूना चाहना।) अब टो नाज़िनी टुम राज़ी हुई न? आओ नाज़िनी।

हमी-। (जिस दरवाज़ेसे रो साहब आये थे उसी तरफ़ भागती हुई) देख, हरामज़ादा, हिन्दुस्तानकी औरतें क्योंकर अपनी इज़्ज़त बचाती हैं।

[भाग जाना।

रो। बाई दी ड्रैगन—ऐक्चुएली जम्प्ट डाउन फ्रौम दी वैरंडा।

[दौड़के जाना।

कुछ देर के बाद बोझ से ख़तपत हमीदा को ले कर रो साहब का फिर प्रवेश।

हमी-। (ज़ोर से रोती हुई) साहब, मुझे छोड़

दीजिये ।——हमारी फिल्लियो में बड़ो चोट है, मैं खड़ी नहीं हो सकती । (कांपना ।)

री । (झुंझलाके) अम ये सब बाट कुछ सुनने नेई मांगटा है । टुम जल्डी टइयार हो ।

हमी- । हज़्'त मुझ पर मिहरबानी कीजिये । बराये खुदा मुझे छोड़ दीजिये । देखिये हमारे सर से खून जारी है, मुझे मार डालिये तो बिहतर है, पर खुदा के लिये हमारी इज्ज़त मत लीजिये ।

री । कुछ सुनने नेई मांगटा । अम कबी नेई छोरेगा ।

हमी- । जनाब, मुझ को छोड़ दीजिये, मैं आप के पाओं पड़ती हूं । (बहुत लोहू के बहने से गिरना, और तुरत बेहोश हो जाना ।)

री । अम इससे भी नेई डरटा । (हमीदा की तरफ़ दो एक क़दम बढ़ना ।)

नेपथ्यसे । (बड़े ज़ोर से) खोदाबन्दी, जोलदी आइये, जोलदी । खोदाबन्दी, जोलदी जोलदी । (और ज़ोर से) श्री खोदाबन्दी——

री । (हमीदा की तरफ़ नहीं जाकर) डेम

दी फ़ेलो, क्या हुआ डीननाट,——गडा की माफिक क्यों चिल्लाटा है ?

नेपथ्यसे। खोदाबन्दो, जोलदी आइये। अब कोयदी लोग जेलखाना भांग दिया, खून कीया, ओई आप को मारने चोला जाता है।

हमीदा को होश होना।

रो। (घबरा के) अम अबी जाटा है। (हमीदा से) टुम किसी माफिक अमारे मुहब्बट के आघोश से बचने नेई सकेगी। अम बजट जल्डी फिर आवेगा। टुमको उस कोठरी में बन्ड कर आवेगा।

नेपथ्यसे। खोदाबन्दो, अब देरी कोरने का वाखत नेई है। खून कीया, खून। जोलदी, जोलदी—

रो। आया, आया।

[हमीदा को ले कर जाना।

पांचवीं झांकी।

बाढ़ का जेलखाना।

कैदियों की सरकशी।

क़ैदी लोग। तोड़ो तोड़ो, मारो मारो सारन के। (फाटक तोड़ने की कोशिश।)

१ क़ैदी। अरे भइया किवाड़ी का नाहक काहे का तोड़त हो? जका टूटी? जतो लोहा का बना आय। दिवारै सारका न खोद डारौ।

२रा क़ैदी। अब इस मजिस्ट्रेट का जुल्म नहीं सहा जाता। खाह पाओं की ज़ंजीर तोड़ के आज़ाद होवेंगे, या मर जावेंगे। होवै कुछ अब बेड़ी नई पहिनेंगे। भाइयो चले आओ, पीठ न दिखाओ। जिस जिस ने पाजी अंगरेज़ की गालियां और लातें खाई हैं, चले आओ। जो एक बाप का जना है, और जिस के जिसके जी में हिन्दुस्तानी खून का एक बूंद भी मोजूद है सब इस नेक काम

के साथी हो। हिन्दू हो चाहो मुसल्मान हो, बंगाली हो चाहो हिन्दुस्तानी हो, मरहटे हो चाहो राजपूत हो, सब कोई इस नेक काम के साथी हो। यारो, जब तक सब न मिलेंगे तब तक यह होना नामुम्किन है।

१ कैदी। भइया, था खत कहा हो, तोड़ो तोड़ो।

(तलवार लिये दो कौन्सबलों का प्रवेश।)

कैदी लोग। (उन की तरफ़ दौड़ कर) अली, अली, अली, मारो सारन के, मारो सारनके। (इस देस की रोटी नोन खाय के अंगरेज़ की ओर से लड़त हैं। ऐसी नमक हरामन के मारनो ही अच्छो है। (एक एक छिव में दोनों को साफ़ करना।)

४, ५ क़ैदी। (उस की लाश घसीटते घसीटते) कहो, जमादारजी अब अंगरेज़ों की तरफ़ से ज़रा फिर लड़ो तो!

१ कै। अब वक़्त ज़ाया न करो, मारो। आओ, इधर आओ दीवार तोड़ो।

(रिवौल्वर और किर्च लिये दो साहब का प्रवेश।)

कै। मारो साले को, मारो साले को। (दो पर हमला करना।)

री। इट इज़ बेन नाज टू एडौप्ट पैसिफ़िक मीन्स। (गोली चलाना, और दो क़ैदियों का गिरना, और दो एक का भागना।)

१ क़ैदी। भाइयो भागते क्यों हो? मरने से डर कैसा? और भागने ही से क्या अब बच सकते हो। उस के तमंचे में जितनी गोलियां थीं, सब तो छूट चुकीं। लो अब आओ, पकड़ो। अ ल ल ल।

सब क़ै-। हलललल। (री साहब पर हमला करना और री साहब का किर्च फेर कर जान बचाने की कोशिश।)

१ क़ै-। (लाठी घुमाता घुमाता) रउआ कनचप्पड़ रोकी नू। (सिर की तरफ़ इशारा करके टेहूने पर लाठी का मारना और साहब का गिरना। और उन पर लाठियों का बरसना।)

१ क़ै-। (री के हाथसे तलवार छीन, उस के सीने पर सवार होके और ऊपर मुंह उठा के।) खबरदार जे तोहनी इधर आव। हमरे नाम महदेवा हई। हमरे अंखिया के सामने ई सार हम्मर जोरुआ के धरम लेले हल। सरवा के अकेला हम ही मारबई। खबरदार एने

मत केज आवे। (रो साहब की तरफ़) काहे मारी अब न हम्मर जोरुग्रा के धरम नष्ट करब? (सीनेमें तलवार भोंकके) काहे अब मुंहसे बकार न चली हई? (फिर तलवार से मारना।) बोले न सरवा। (रो साहब का कहरना) अब जाकर हम्मर कलेजा ठंढा भेलई।

और २ क़ैदी। बस करो, बस करो। काम तमाम हो चुका। चलो अब सब कोई अपनी अपनी राह लो।

[सब का भागना।

छठी झांकी।

बाढ़—पुराना मकान।

बादल का गरजना, बिजली का चमकना, और पानी का बरसना। एक आदमीके साथ एक हाथ में लालटेन और दूसरे में तमंचा लिये कैसर का प्रवेश।

आदमी। (डरके) हजूर हम तो अब वहीं नहीं जांगे। आप का जी चाहे तो जाइये।

ग़ायब से। हूं-हूं-हूं-हूं-हूं।—(नक्की आवाज़)

आदमी। राम राम राम! (भागना चाहता है।)

क़ै-। (उसे लौटा कर) अच्छा तुम्हें अगर नहीं जाना मंजूर है तो मत जाओ। मगर सच सच बताओ, उस औरत को तुमने यहां देखा है?

ग़ायब से। खों-ओं-ओं—

आदमी। ए बाबा! ए बाबा! हजूर छोड़ दीजिये, हम नहीं बचेंगे।

क़ै-। पहले हमारे सवाल का जवाब दे लो।

आदमी। हां इधरे पकड़ के ले गया था।

ग़ायब से। पकड़ कें लें गैयां हैं तों (वग़ैरह।)

आदमी। मरे मरे मरे। छोड़ो साहब (क़ैसर का छोड़ना) (फिर आवाज़ आई और उस आदमी का बेहोश हो कर गिर पड़ना, और क़ैसर का हाथ पकड़ कर उठाना, और उस आदमी का क़ैसर को भूत समझना।) दोहाई बाबा भूत, दोहाई भूत रामकी। हम यहां अपने मन से नहीं आये थे, वही साला जोर कर के ले आया था, वही वही। उसी का गला जाके चोपो, भूत देवता।

क़ै-। अबे मैं भूत नहीं हूं। आंख तो खोल।

गायबसे। हूं—हूं हूं हूं हूं——

आदमी। मरे मरे! भूत नहीं हो तो क्या हो? तुम तो भूत के बाबा हो।

के॰। उठ खड़े हो। उठो। (पकड़के हिलाना।)

आदमी। भूतराम मार मत डालियो। हम तुमरे पांव पड़ें हैं। हम आपे भागे हैं।

[भागना।

(चारों तरफ़ से डरावनी आवाज़ और पेड़ों के हिलाये जाने की आवाज़ें सुन पड़ती हैं।)

के॰। अगर बी हमीदा यहीं हैं तो मैं इन भुतखेड़ों से डरने का नहीं। एक बार गोशे गोशे कोने कोने तमाम ढूंढ लूंगा तब जाऊंगा। जान जाय सो भी क़बूल है, पर हमीदा को साथ ही लिये जाऊंगा।— जैसा किया वैसा पाया।

(डरावनी आवाज़ें सुन पड़ती हैं और ग़ायब से ठिकरियां बरसती हैं।)

अगर मर्द है तो सामने आ। वरन छिपे छिपे औरोंको डराया कर। केसर इन गीदड़ भबकियों से नहीं डरता।

(एक डरावनी शकल का नीचे उतरना और तुरत ग़ायब हो जाना।)

भागा क्यों? काछा ढीला हो गया? तुझे क़सम खुदा की है फिर आ।

(दूसरी तरफ़ फिर ज्योंही एक शकल देख पड़ी कि कुंवर ने गोली चलाई, और वह शकल ज़ख़मी होकर ज़मीन पर गिरी।)

(उस शकल के सीने पर पांओं रख कर) बता तू कौन है? नहीं तो अभी तुझे मलकुलमौत के हवाले करता हूं।

शकल। बतावे हैं, बतावे हैं, पहले हमरे मूं का कपड़ा तो खोल दो।

कु०। (मुंह से कपड़ा खोल कर) बता जलदी।

शकल। बाबू हम जात के जोलहा हैं। लालच के कारन एक दफे बाभन के खेत से धान चोरावे गयें थें, बभनवा जो राहड़ के खेत से देखिस था है, आ के तुरत्ते थम्बे किहिस। साला घरवा में आठो दसा कर के दुसरे दिन भोरे थाना में भेज दिहिस। थनवांवाला डिप्टी कने चलान कर दिहिस। डिप्टी साहब कहिन कि "जो हम कहते हैं वह अगर नहीं करेगा तो काला पानी

चलान करेंगे।" हम डर से उनकी बात क़बूल कर के छीयां रहे लगें हैं।

क़े-। तू अपनी दास्तान इस वक़्त रहने दे। मुझे यह बता कि डिप्टी ने तुझे यहां क्यों रहने कहा है?

अकल। जी—जी—

क़े-।(तमंचा दिखला कर) बचा अभी मारे डालता हूं। जलदी बता।

अकल। कहे हैं, कहे हैं। नरेटी तो छोड़ो। कभी कभी किसी की मेहरारुन को साहब पकड़ ला के हियें रक्खें हैं। यह घर भुतहा है, इस से कोई इधर खोज खबर लेवे नहीं आवे है। हम ही भूत की बोली बोल के सब को डरायें हैं। डरके मारे कोई न आने पावे है।

क़े-। अल्लाह यह बात है! अच्छा आज शाम के वक़्त किसी औरत को ले आया था? (अकल का इधर उधर करना।) बता वरना अभी तेरी सफ़ाई किये देता हूं।

अकल। हां, लाइस था है।

क़े-। वह है कहां?

शकल। पुरबवारी घरवा में। मगर आप जाओगी कैसे, तमाम ती ताला बन्द है।

कै-। कुछ परवा नहीं, तू सीढ़ी तो ले आ। देख तूने नाकर नूकर किया और मैं तमंचा तुझ पर छोड़ ही दूंगा। चल, मैं साथ चलता हूं।

(दोनों का जाना और सीढ़ी लेके फिर प्रवेश।)

कै-। इस सीढ़ी को इस खिड़की तले लगा। (शकल का वैसा ही करना) मुझको तेरा इतमाद नहीं है। तेरे हाथ पांव बांधके ऊपर चढूंगा। (वैसा ही करना, और सीढ़ी से खिड़की तक चढ़कर खिड़की का तोड़ना।)

अन्दरसे। उई, खिड़की कौन तोड़े है।

कै-। (हमीदा की आवाज़ सुनके खुश हो कर) खैर शुक्र है,—मैं हूं, कैसर। आइये हमारे कांधों पर पैर रख के उतर आइये। कुछ मुज़ायका नहीं।

अन्दरसे। खुदा खैर करे, आप हैं! खुदा आप का भला करे। (कैसरके कांधों पर पांओं रख कर हमीदा का उतरना।)

(हमीदाका कैसरके पांओं पर गिरके सुसुक सुसुक के रोना।)

कै-। लाहौलवलाकूवत, यह क्या? उठिये उठिये, समझा? (कैसर का दूर हट जाना।)

हमीदा। आपके कांधे दुख तो नहीं गये। हाय, मैं किस ज़बान से आप का शुकुरिया अदा करूं! आपने मुझे—(ज़बान रुक गई।)

कै-। कुछ बात नहीं है, आदमी ही से आदमी की मदद मिलती है। आप ठहर क्यों गईं?

हमी-। इत्ती बड़ी रातको आप के साथ इकली क्योंकर जाऊं? कोई क्या कहेगा?

कै-। आखिर करना क्या है? फिर इस वक़्त है कौन, जो हंसेगा?

हमी-। जी हां, और क्या आफ़तके वक़्त शर्म करने से काम नहीं चलता।

[दोनों का प्रस्थान।

चौथी झांकी।

वाद़—ग्रमग्राद् का मकान।

(हमीदा बैठी है।)

हमी-। उनके आने का वक्त, तो हो चुका। बात ठैरी क्या आख़िर? क्यों कर मालूम हो। किसी आदमी को भेजूं?

कैसर का प्रवेश।

आइये बैठिये, आप ही को अभी याद कर रही थी।—आख़िर क्या सलाह ठहरी?

कै-। (हंस कर) सोसन के निकाह पढ़वा देने की सलाह आज हो ठहरती है। अब देर करने में क्या फ़ाइदा है? क्यों, आप की क्या राय है?

हमी-। हम औरतों की राय क्या? जो मुनासिब हो सो कीजिये। लेकिन भइया को क्यों कर राज़ी कीजियेगा? शादीका ज़िक्र तो

किनारे रहे, नोज़ बिल्लाह बीवी सौसन के नाम ही पर वह उलझ पड़ते हैं।

क़ै-। इन्शाह अल्लाहं ताला वह राज़ी हो जायेंगे।

हमी-। बी सौसन को अपनी शादी की ख़बर है या नहीं ?

क़ै-। नहीं। आज सुबू को पूछती थी, कि "भइया, आज क्या है ? यह रौशनी उशनी का क्यों सामान हो रहा है ? हमने कहा कि आज अपने यहां कई एक मिहमानों की ज़ियाफ़त है। इसी लिये रौशनी वग़ैरह के सामान हो रहे हैं।"— अब देखिये आप अपनी तरफ़ की तइयारी कीजिये। हमारी तरफ़ सब सामान दुरुस्त हैं। अब जहां तक मुम्किन हो जल्द होना बिहतर है। अल्लाह अल्लाह सौसन ने अपनी क्या हालत कर डाली है। बदन है कि कांटा कांटा हो गया है। उसका चिहरा देखिये तो बइनह हल्दी से रंगा मालूम होता है। इलाही, मुझे क्या सूझी थी !

हमी-। यह बात किसकी किसकी कानों तक पहुंची है ?

कै-। और किसके किसके कानों तक? इस वक़्त तक तो सिवा आप और हमारे और नाना के कोई फ़र्द बशर नहीं जानता। ख़ैर तो मैं अब जाता हूं।—बग़ैर नतीजा सोचे जो लड़कपन मैंने किया है, उससे आप लोगों के सामने मुंह दिखलानेमें मुझे शर्म मालूम होती है। (ठंढी सांस का लेना।).

[जाना।

हमी-। (मुस्कुराके) क्या कहने हैं! हम लोगोंके सामने मुंह दिखलाते शर्म मालूम होती है! (सर नीचा किये ग़ौर करना।)

शमशाद का प्रवेश।

हमी-। (शमशाद को देखके, जीमें) असल बात को जल्द ही कह डालूं, वरना कहीं ऐसा न हो कि नाम के नहीं ही लेते लेते मैं चले जावें। (ज़ाहिर।) भइया, आज सौसन की शादी है!

शम-। (ज़रा देर तक चुप रहके) उस को आज शादी है?—ख़ैर मैं सुन कर खुश हुआ।—किससे?

हमी-। खुदा मालूम किससे। मैंने तो अभी सुना है।

शम-। अ:, इतने दिनों के बाद अब हमारे दिल को तअफ़्फ़ी हासिल हुई।—इसी वजह से शायद वहां इतनी हलचल मची हुई है।

हमी-। यह हमलोगों को दिखाते हैं।—अय ले, बी सोसन के व्याह की धूमधाम देखके क्या हमलोग ज़िन्दे रहेंगे? अब भइया का भला काहे को व्याह होगा? उन्ही के यहां तो एक अनोखी लड़की है।

शम-। (प्यार से) हमीदा, मुहब्बत जिसे कहते हैं, वह तुझी को मुझसे है।—(मुस्कुरा के) तू उसकी शादी में जायगी या नहीं?

हमी-। असतग़फ़िरुल्लाह मैंने कभी शादी देखी है या नहीं?—भइया, मैं सच कहता हूं मुझसे यह शान नहीं देखी जाती। खुदा न करे किसीके दबेल हैं, वह अपनी शान दिखाते हैं तो हम भी अपनी शान दिखायेंगे। हमारी तो राय है कि मैं भी तुम्हारे व्याह का आज ही शोर मचा दूं।—बाजे बिठा दूं।

शम-। (हंस कर) लड़की कहां ठहरी है?

हमी-। भइया, किधर तुम्हारा ख़्याल है? अल्लाह तुम्हारी ज़िन्दगी बरक़रार रक्खे, अल्लाह देखना, लड़की आप ही आप सामने आकर खड़ी होगी।

शम-। (ठंडी सांस लेकर) हमीदा, क्या कहूं तुझ से कहते शर्म आती हैं, किसी वक़्त, मैं मैं सोसन को दिलसे चाहता था। और अब— (आंखों का डबडबा आना।)

हमी-। (जीमें) ख़ैर सोसन का नाम तो मुंह से निकला। उसके नाम से एक क़तरा आंसू भी गिरा, अब कुछ परवा नहीं। यह भी एक अच्छा शगुन है। (ज़ाहिर।) भइया, अब ना-हक़ क्यों उसके लिये अफ़सोस करते हो?

शम-। अफ़सोस नहीं करता हमीदा, मगर देख—(आंसू का बहना।)

हमी-। चलो भइया, ज़रा सा नाश्ता कर लो।

[दोनों का जाना।

सोसन और केसर का प्रवेश।

सोस-। (रोती रोती) भइया, क्या सचमुच आज उनका व्याह है? बी हमीदा ने तो इसके बारे में कुछ नहीं कहा।

के-। झूठ बोलना बड़ा गुनाह है। और तेरे सामने झूठ बोलने का मुझे क्या नफ़ा? (नेपथ्यमें बाजों की आवाज़ें।) ले सुन, अब तो मानेगी? — बाजे भी बैठ गये। अच्छा ज़री तू यहीं खड़ी रह, मैं झांक के देखि आऊं कि क्या क्या सामान हुए हैं।

[केसर का जाना।

हमीदा का प्रवेश।

सोसन। (सिसकती सिसकती) बी, मैं योंहीं तुम्हारे यहां आई हूं। अभी चली जाती हूं। देखो बुरा न मानना। मैं एक बात पूछने आई थी। हां बी, क्या सचमुच आज—तुम्हारे भाई का ···(ज़बान का रुक जाना।)

हमी-। (झिड़क कर।) क्या पूछती हो, पूछो न?

सोस-। तुम इस तरह मुझ से क्यों झिड़क के बोलती हो? हाय रे मेरी फूटी क़िस्मत! बी, तुम भी पराई हो गईं? अल्लाह जानता है मैं ने तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। (रोती है।)

हमी·। (जी में) हमें भी रोलाई चली आती है। (जाहिर।) लिल्लाह मुंह से कुछ बात भी तो निकालो।

सो·। (बड़ी बड़ी मुश्किलों से रोना रोक कर) तुम्हारे भइया का क्या आज ब्याह है?

हमी-। हां हां है तो सही, तुमने क्या समझा था कि हमारे भइया जनम भर कुंआरे ही रहेंगे!

[जाना।

सो-। (रोती रोती) भइया उस दिन क्यों तुमने आकर नाहक़ रोक दिया? हाय हाय कब तक और ये दुख सहने पड़ेंगे! इतने दिनों के बाद अब वह हमारे पराये हुए! ख़ैर पराये ही सही लेकिन ख़ुदा उनकी तन्दुरुस्तियां बरक़रार रक्खे। उन्हें तन्दुरुस्त और ख़ुश देखूंगी तो मुझे भी ख़ुशी हो सकती है। (रोना।)

गीत ।

(भैरवी ।)

" किन वे रुठाया मेरा यार ?

कहां गया क्यों छोड़ गया मोहि,

तोड़ गया क्यों प्यार ?

बन बन पात पात करि पूछूं,

कोई न सुने पुकार।

हरी चंद गल लगन हौंस में

बिरहिनी जरि भई छार।

अमग्याद का प्रवेश ।

अ-। ख़ुसीकी भी क्या चीज़ है, पर मेरा यह भी सुनने को जी नहीं चाहता ? अस्तग़फ़िरुल्लाह हमारी यह क्या हालत हो गई ! न पढ़ने में जी लगता है, न दोस्तों से बातचीत करने में, न फिरने में। अल्लाह अल्लाह मैं क्या हो गया ! (अचानक सोसन पर नज़र पड़ना।) यहां सोसन कहां ?—सोसन ही है न ?—(कुछ आगे बढ़ कर) और क्या सोसन ही तो है। ज़रा पूछूं तो कि यहां क्यों आई है। (ज़ोर से) तुम यहां किस वास्ते आई हो ?

सो-। भइयाके साथ आई हूं, अभी जाती हूं चली। बराय खुदा, आप ख़फ़ा न हों ?

शम-। अपनी शादी का बुलावा देने आई हो ? तकलीफ़ करने की तो ज़रूरत न थी, हमलोगों को पहिले ही मालूम हो चुका है।

सो-। ऐं हमारी शादी! अपनी शादी की बात, छिपाने के लिये शायद आपने इस तरह कहा। (मुसुककर) सो छिपाने की क्या ज़रूरत है। आप जैसा चाहें समझें लेकिन मैं वही हूं, और आप की खैर ही मनाती रहती हूं और रहूंगी। ऐसा हमारा हरगिज़ इरादा नहीं, कि मैं आप की खुशी की राह में कांटा होऊं ? (रोना।)

शम-। खुदा का तुम्हें ज़रा भी खौफ़ नहीं है ? झूठ बोलते ज़रा भी शर्म नहीं आती ? — खैर (ठंडी सांस लेके) जिस से तुम्हारी शादी होने वाली है, उस से बढ़ कर दूसरा और कोई क़िस्मत-वर नहीं ?

सो-। (शमशाद का हाथ थाम कर) शमशाद, आंसुओं से तुम्हें मैं देख नहीं सकती। जी चाहे मार डालो, पर ऐसी रूखी बात न सुनाओ।

देखो, खुदा जानता है, मैं तुम्हारे सिवा किसी को नहीं जानती। वल्लाह, किसी को नहीं जानती। (बिलक बिलक कर रोना।)

शम। (गुस्से के साथ) चल झूठी, दूर हो हमारे सामने से। जो मैं अभी आंखों से सरासर देख रहा हूं, उस में भी मुझे झूठलाती है? खुदा का नाम लेकर झूठ बोलती है? बदकार, तुझे दोज़ख़ में भी जगह न मिलेगी।

[झटके से हाथ छुड़ा कर जाना।

[सोसन का गिरना और बेहोश हो जाना।]

(केसर का प्रवेश।)

केस। हा, हा, चार दिन से बराबर फ़ाक़े पड़ी रही है। गलके कांटा कांटा हो गई है। हमें तो अब इसका जीना मुहाल मालूम होता है। (ठंडी सांस लेके) हाय, यह हमारे ही लड़क-पन का नतीजा है। मुझे दोज़ख़ में भी जगह नहीं मिलेगी। (सोसन की बेहोशी दूर करने की कोशिश।)

नेपथ्यसे। भइया, एक बात सुने जाओ, एक झंझट। बीबी हैसन की आज शादी जदी नहीं है।

मैंने सब झूठ मूठ कहा था। सुनो, सुनो, मैं सब हाल कहती हूं। लिल्लाह, ज़रा सुन लो।

सो-। (जोश में आकर रोती रोती) भइया, ज़रा उनको इधर बुला लाओ। देखो उन्हें मेरी तरफ़ से हाथ जोड़के कहना कि, "हमारी एक बात सुन जावें, हमारी ज़िन्दगी की-आख़िरी अर्ज़ यही है।" (रोना।)

कु। अभी मैं बुलाये लाता हूं। तू चुप हो।

[जाना।

हमीदा और अमग्राद का प्रवेश।

अम। मैं सोसन को अपना मुंह कैसे दिखलाऊं? लाहौलवलाकूवत बेसमझे बूझे मैं यह क्या कर बैठा! इन सब फ़सादों का बानी कैसर ही है।—देख, हमीदा ज़रा तू उधर तो जा रह। यहां क्या करती है, जा अपना कामकाज देख।

हमी। अच्छा जाती हूं। (जीमें) अब क्यों नहीं मैं अपना कामकाज देखूंगी। जाऊं ज़री ओट में बैठ के देखूं तो सही भइया क्यों कर बीवी साहबको मनाते हैं।

[जाना।

ग़-। सोसनके पास जा के उसका हाथ थांभ कर और शरमाके) सोसन——

सो-। (ग़मग़ाद के पांओं पर गिर कर) प्यारे, आज क्या है जो यह कमबख़्त याद आई है। इतने दिनों के बाद क्या अब हमारे हाल पर रहम आया? (रोना।)

ग़-। (आंख बन्द करके २ सोरन के पास कर) सोसन——

सो-। (रोती रोती) ग़मग़ाद, अब मैंने बहुत दुख सहे, मैं अब अपनी जान न रक्खूंगी, देख मैं तेरे सामने ही अपनी जान क़ुर्बान करती हूं।

ग़म-। वाक़ई, मैंने इस पाक और नेक-मिज़ाज भोली लड़की को बड़ी तकलीफ़ दी। सोसन, सुनो——

सो-। ग़मग़ाद, तुम बहुत दिनों पर मुझसे आज बोले हो—मेरा जी नहीं चाहता कि तुमसे बातें करूं। (रोना।)

ग़-। या अल्लाह क्योंकर मैं इसे चुप करूं। —(चौंक कर) या अली, कितना बड़ा गुहमना सांप! (तड़प जाना।)

सो-। (डर से चौंक के और उठ कर) कहां? कहां?

अ-। (हंस के सोसन का हाथ थांभ कर) कहां? यहां सांप कहां से आया, सोसन? सिर्फ़ तुम्हें चुप करने के लिये मैंने इतना कहा था।

सो-। (आंख पोछ के) हुं-उ-उ, झूठ झूठ डराते हो? (फिर रोना शुरू करना।)

अ-। सोसन, सुनो अब मत रोओ। (देखो मैं अपने कान मलता हूं। लो, अब क़सूर मुआफ़ करो। (कान मलना।)

हमीदा का प्रवेश।

हमी-। हि: हि: हि:, तौबा अब हंसी नहीं रुकती। पेट फूल कर तूंबा हुआ चाहता है! हि: हि: हि:, भइया तुम्हारे कान में क्या हुआ है? हि: हि: हि:!

अम-। (जी में) लाहौलवलाकूवत, यह कम-बख़्त फिर तुरत ही कहां से पहुंची। (सिर खुजलाते खुजलाते, ज़ाहिर।) दहिने कान में यह एक दाना सा क्या तो हो आया है, उसीको ज़रा सुहलाता था।

हमी। हि: हि:, हि: भइया तो क्या तुम्हारे

बायें कान में भी दाना हो आया है ? छि: छि: छि: ।

(जाना ।

ग़म- । मालूम होता है कि इस ने अन्दर से सब देख लिया ।

सो- । (आंख पोछ के और ज़रा मुस्कुराके) खूब हुआ । "जैसा किया वैसा पाया ।"

ग़म- । सोसन, ज़रा फिर तो हंसो । —इस दुनिया में मैंने एक से एक उम्दे से उम्दे चीज़ें देखी हैं, लेकिन औरतों के मुंह पर रोते रोते एकबारगी हंसी का आ जाना, इस से बढ़ कर खूबसूरत चीज़ मैंने कोई नहीं देखी । (सोसन का हाथ थांभ कर) अब तो मुझ पर ख़फ़ा नहीं हो ?

सो- । (प्यार से) ग़मग़ाद, भला कभी मैं तुम पर ख़फ़ा हुई हूं, जो आज हूंगी ?—ग़मग़ाद, मैं एक बात कहती हूं, रंज न होना । भले आदमी की बहू बेटियों पर बे समझे बूझे फ़ौरन शक कर लेना मुनासिब नहीं । ख़्वाह वह तालीम याफ़्: हों या जाहिल, अमीर हों या ग़रीब, उनके दिलों में फ़ासिद ख़याल जल्दी आने नहीं पाते । खुदा कहो तो, और रसूल कहो तो, हम औरतों के लिये जो

कुछ हैं सो शौहर हैं। हज़रत सल्लाह लेहवसल्लम ने भी फ़ुर्माया है कि "लो अमृरती अहदन अंइ यस्जी-दृश लि अहदिन ल अमर्तुल् मर्‌अत अन्तस्जोदश जौजहा मिन्‌अज्‌मे हक़े ही अलेहा।"

म-। (जीमें) अब तो गुस्सा उतरा, रोना भी थंभा, ज़रा मुस्कुराहट भी आई, अब जितना जी चाहे उतना बको, झगड़ो, मारो पीटो, समझाओ बुझाओ, सब सह लेंगी।—लेकिन सोसन हरचंद अभी कमसिन है, ताहम अभी जो कुछ इसने कहा, बहुत ही सही है। बे वजह औरतों की चाल चलन पर शक कर बैठने के मरज़में बहुतेरे बड़े बड़े लोग भी मुब्तला हैं। (नेपथ्य की तरफ़ देख कर) लाहौलवलाक़ूवत फिर हमीदा चली आती है, फिर न कहीं छिप के देख रही हो।

(हमीदा का प्रवेश।)

हमी-। (सोसन के पास जा कर) बी साहब, बंदी आदाब अर्ज़ करती है। (सलाम करना) ज़राइस लौन्डी पर भी नज़र-इ-करम फ़ुरमाइयेगा? लिल्लाह इसे भूल न जाइयेगा। शादी में कुछ खाने पीने को इसे भी दिलवाइयेगा।

सो०। (हमीदा के बदन में लपट कर) बुआ, तुमने तो मुझे वल्लाह तंग तंग कर डाला। तुम्हें तो जब न तब हंसी ही रहती है। (खुशी का रोना।)

हमी०। (सोसन की आंख पोछ कर) अब तो सब कुछ हो हवा गया, अब फिर क्यों नाहक रोना शुरू किया?

सो०। बुआ, मैंने अब समझा, क्यों तुम उस वक्त मुझ से इस तरह झिड़कके बोली थीं। अल्लाहरे, मैं नहीं जानती थी कि तुममें इतने फ़न फ़रेब भरे हैं।

(ग़ामग़ाद और केसर का प्रवेश।)

ग़म०। (केसर का हाथ थांभ के) अजी मैंने यों ही हंसी से कहा था, ऐ है तुम तो रंज ही हो गये? भला बनारस में तुम्हारा कौन सा काम इस वक्त अटका है, जो तुम वहां जाते हो?

के०। नहीं खफ़ा होने की भला कौन सी बात है?—मगर नहीं, मैं खुद ही अपने क़सूरों पर नादिम हूं। यक़ीन है कि आप लोग मुआफ़ करेंगे। और गंवार-मसला भी है "न रहे बांस न बजे बांसुली।" बहन सोसन, तो मैं अब रुख़सत होता

हूं. देख कुछ ख़याल मत करना, मैंने तुझको हक़ीक़त में बड़ी बड़ी अज़ियतें दीं।

सो-। भइया, तुम न होते तो मैं उसी दिन ख़तम हो चुकी थी।

ग़म-। क्या — क्या ? क्या हुआ था, सोसन ?

क़-। अजी वो कुछ नहीं. यों ही।

सो-। (सुसुक कर) जब तुमने मुझे वह ख़त लिखा था तो हमारे दिल पर उसका यहां तक सदमा पहुंचा कि मैं मरने के लिये गले में डोर की फांसी तक चढ़ा चुकी थी। भइया ही के वक़्त पर पहुंच जाने से मैं उस दिन बच गई।

हमी-। (नीचा सर किये धीमी आवाज़ से) भइया, मैंने शरम के मारे इतने दिनों तक उनका नाम नहीं लिया था। लेकिन आज मैं कहती हूं। येही उस दिन रात को मुझ को भी उस आफ़त से निकाल लाये थे।

ग़म-। (कुछ देर तक चुप रह के) अब मुआफ़ मांगने की मेरी बारी आई क्या ? (सोच कर) सोसन, तुम से एक बात की सलाह करनी है, ज़रा इधर तो आओ।

(कुछ दूर जाकर सौसन से सलाह करना।)

क़े-। मैं इसी वक्त. चल दूं, वरना सौसन फिर जाने न देगी। (हमीदा से) बीबी, बन्दा अब रुखसत होता है। हमारी भूल चूक मुआफ़ कीजियेगा।

[जाना चाहता है।

हमी-। देखिये मत जाइये, मैं हाथ जोड़ के कहती हूं, लिल्लाह मत जाइये। (गिड़गिड़ा के) हमारा कहना रख लीजिये, देखिये मत जाइये।

क़े-। (जीमें) आवाज़ से तो कुछ कुछ मालूम होता है।—न: यह सिर्फ़ हमारा एक वहम है। (ज़ाहिर।) आप नाहक क्यों ज़िद करती हैं। हमारे यहां रहने से क्या फ़ाइदा?—क़सूर मुआफ़, इस कमबख्त के जाने पर इसे भूल न जाइयेगा।

हमी-। (ठंडी सांस ले कर) भला यह आप क्यों मुझे कांटों में घसीटते हैं?—तो क्या आप हमारा कहना न मानेंगे?

अस-। (एक तरफ़, सौसन से) तुम्हारे दादा जान इस बात से नाखुश तो नहीं होंगे?

सो-। वह तो मुझसे भी ज़ियादे खुश होंगी।

अम-। हमीदा को तो यह बात पसन्द है न।

सो-। (मुस्कुरा कर और उंगली से दिखा कर) देखती नहीं, पसन्द होने में अब और बाक़ी क्या है ?

अम-। (केसर के पास जा कर) देखो, भाई केसर, तुम हक़ीक़तमें बड़े बेवकूफ़ हो। ऐसे बेवकूफ़ को हमलोग हरगिज़ परदेस नहीं जाने देंगे। शायद परदेस में कहीं अपनी बेवकूफ़ी से किसी आफ़त में पड़ जाओ तो वहां कौन बचाने आवेगा ? मगर भाई तुम्हारा यक़ीन क्या, शायद भाग जाओ। खैर कुछ परवा नहीं, लो, तुम्हारे पैरों में बेड़ी पहनाये देता हूं, जिसमें तुम भाग न सको। (केसर के हाथ में हमीदा को दे कर खुदा करे, तुम्हारे से बेवकूफ़ों का शुमार रोज़ ब-रोज़ दुनिया में ज़ियादा हो!

सो-। (हमीदा के गाल को दाब कर) कहो बी, "मुझे तो शादी ही करनी पसन्द नहीं है। नाम तो इसका शादी है लेकिन सच पूछो तो यह दुनिया के हर तरह के रंजों की दादी ।

हमी-। बुआ, लाहौलवलाकूवत, तुम्हें भइया का भी ज़रा लिहाज़ नहीं है ?

नेपथ्यमें। कहां ? कहां ?

शम-। तुम्हारे दादा जान चले आते हैं, मुझे बड़ी शर्म मालूम होती है

छियात बखश और सटक जिये पीछे

पीछे बखशा का प्रवेश

छिया-। (खुश हो कर) वो, इतनी जल्दी ! हमारे न आते आते में तुम लोगों ने अपना अपना जोड़ा मिला लिया ? सच है कि, "मियां बीवी राज़ी, तो क्या करे क़ाज़ी ?"

सबों का झुक झुक कर सलाम करना।

छिया-। (सबों की पीठों पर हाथ ठोक ठोक के) और क्या दुआ दूं —जैसे खुश अभी हो, सारी ज़िन्दगी ऐसे ही रहो! अल्लाह तुम दोनों की जोड़ी आबाद रक्खे ! —(कैसर की तरफ़ उंगली दिखा के, शमशाद से) क्यां, यह सारी कार-रवाई इनही साहब की है! ——मगर अब यह तुमलोगों के मेल और इस बात से मैं

कितना खुश हुआ, मैं बयान नहीं कर सकता। —अजी एक बात कहनी है, कहें ?

अम-। हां, हां, फ़रमाइये न।

छिया-। इसमें शक नहीं कि तुमलोगों में अंगरेज़ी के पढ़ने से खरापन हमदर्दी वग़ैरा बहुत सी अच्छी अच्छी सिफ़तें आ गई हैं, लेकिन भाई ज़रा सा ——देखना बुरा न मानना ——तुम-लोगों के मिज़ाज तलउवन तबा बहुत होते हैं। अगर यह ऐब तुमलोगों में न होता, तो क्या मजाल कि कोई तुमलोगों की तरफ़ उंगली दिखा सकता।

बख़शा। (जीमें) कैसर मियां बहुत ठगिन हैं। इसी बेले हम सब चुका ले हैं। (कैसरके पास जा कर) कहो मियां टोपिया दोगे कि नहीं ?

कै-। (रुपया दे कर) ले ले, सुन, चिल्ला मत। जा हंट जा।

बख़शा। ई का एक्के रुपइया ? कहो फिर ऐसे न पटक दोगे ? (रो कर गिर पड़ना।)

छिया-। क्या हुआ, क्या हुआ ? बख़शा गिर पड़ा क्या ?

क़ै-। जी नहीं, वह यों ही नक़ल लाता है। (बख़्शा से) हे ले एक रुपया और ले।

बख़्शा। जां हैं, भइया को दे आवें।

[नाचता नाचता गया।

हिया-। मियां ग़मग़ाद, लो ज़रा इधर तो आओ तुम से एक बात पूछनी है।

ग़मग़ाद और हियात बख़्श का दूर हटकर सलाह करना, और सोसन का भी अलग हो जाना।

हमी-। (धीरे धीरे) तुम ने उसे रुपया इस वख़्त किस वास्ते दिया?

क़ै-। (जी में) माशूक़ा के मुंह से लफ़्ज़ "तुम" का निकलना कितना प्यारा मालूम होता है! (ज़ाहिर।) पीछे कह दूंगी। —हमीदा सच तो कहना, तुम हमें दिल से चाहती हो या नहीं?

हमी-। (मुस्कुरा के नीचा मुंह किये) अभी तक समझ न सके?

बख़्शा का प्रवेश।

बख़्-। बड़े मियां, बड़े मियां, अबकी हम

मरे। फिर ऊ बुड्ढे आये हैं। (हियात बख़्श की बग़ल में छिपना।)

हिया-। (हंस के) हमने तो छड़ी की ठकठकाहट ही से समझ लिया था कि जनाब हाजी सुल्तानबेग साहब पहुंचे।

नेपथ्यसे। जनाब मीर साहब मकान पर तशरीफ़ रखते हैं?

हिया-। जी हां, हाज़िर हूं।— तशरीफ़ लायें।

नेपथ्यसे। हुजूर, हमारे साथ हमारे बेटे भी हैं।

लड़कोंके साथ हाजी सुल्तानबेग का प्रवेश।

हिया-। अस्सलाम अलेकुम। तशरीफ़ लायें। सब कोई सलाम करो। (सब का सलाम करना।) हज़्रत, हमारा इरादा है कि अपनी पोती और अपने नाती दोनों के निकाह अब जल्द ही पढ़वा दें।

हाजी-। क्या खूब, इससे बिहतर और क्या हो सकता है?

हाजी जी के बेटा। (जल्दी से) बावा, पुलाव की बात भूल तो नहीं गये?

बख़्-। (जीमें) "बड़े मियां तो बड़े मियां

छोटे मियां सुभानल्लाह।" आते देर नहीं कि खावे की छटफटी पड़ी।

हिया-। अजी, उन्हें याद हो या नहीं, हमें तो याद है।

हाजी-। प्यारे बच्चो तुम लोगों ने तो अंगरेज़ी पढ़ी है। तुमलोगों को और क्या नसीहत करूं, सिर्फ़ इतना ही कहे देता हूं कि यह हज़रत सल्लल्लाहअलैहेवसल्लम ने फ़र्माया है कि,

"अइयुमा इम्रातिन मातत् व जौज़ोहा,
अनहा राज़िन दख़लतिल जन्नत्अ।"

यानी जो औरत कि मर गई औ ख़सम उसका उससे राज़ी रहा तो वह दाख़िल हुई जन्नतमें।

जिस कुन्बे में मियां बीवी में मुहब्बत रहती है, वह ख़ानेखुशी है, बलकि उसे जन्नत-इ-बरीं कह सकते हैं—और बरख़िलाफ़ इसके वीरान और दोज़ख़।

ख़तम।

साधोरामने छापकर प्रकाश किया।